केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 48 सोमवार 7 सितम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

17 से सेवा संकल्प अभियान चलायेगी भाजपा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा के नेतृत्व में रविवार को पार्टी जिला कार्यालय पर सेवा संकल्प अभियान' के तहत जिला कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला प्रभारी डॉ. समीर सिंह रहे, जबकि कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री अमृत कुमार वर्मा ने किया।

मुख्य अतिथि डॉ. समीर सिंह ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को 'सेवा संकल्प अभियान' के उद्देश्य, जनसामान्य तक सेवा गतिविधियों को पहुँचाने तथा आगामी पखवाड़े के योजनाबद्ध क्रियान्वयन पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलने वाले पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों 'सपनों का भारत' 'नमो सेवा गाथा' 'आगमन उत्सव' आदि को प्रभावी ढंग से गाँव–गली तक पहुँचाने का आह्वान किया।

कार्यशाला में , संजय जायसवाल, दयाराम चौधरी, पवन कसौधन, रवि सोनकर, यशकांत सिंह, सुशील सिंह, राजेश पाल चौधरी, वैभव पांडेय, राम श्रृंगार ओझा, प्रत्यूष विक्रम सिंह, शालिनी मिश्रा, शिवानी सिंह, दिलीप पांडेय, अखण्ड सिंह, अभिषेक कुमार, प्रेमप्रकाश चौधरी, राधेश्याम कमलापुरी, राजकुमार शुक्ला, सुनील सिंह, सुरेंद्र चौधरी, नीलम गौड़, नीरज त्रिपाठी, दिव्यप्रकाश सुधाकर पांडेय, नीरज विनय भारद्वाज त्रिपाठी, संजय पांडेय, राजेंद्र राजभर, सतीश सोनकर, आदि उपस्थित रेहे।

सलीके से जीना सिखाते हैं शिक्षक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

रूधौली (बस्ती) । शिक्षक दिवस के अवसर पर मौलाना अबुल कलाम आजाद जूनियर हाई स्कूल, रूधौली के मोहल्ला कैडिहवा में छात्र–छात्राओं ने खूब धूम धाम से कार्यक्रम आयोजित किया और शिक्षकों को पेन आदि उपहार दिए। इस अवसर पर बच्चों ने भाषण और नज्म गीत के माध्यम से शिक्षकों के मर्तबा और उच्च स्थान को उजागर किया। बच्चों में विशेष रूप से राबिया खातून, सना मसिना, सना धंसा, सना रुधौली, खदीजा, नाजिया, मनतशा, जुवेरिया, राजिया, नौशीन, रफीक–उन्–निसा, सायरा, सानिया, सादिया सहित अन्य छात्र–छात्राएं शामिल रहीं।

इसके बाद, मैनेजर मोहम्मद असलम शादां बस्तवी ने शिक्षकों को पेन और पोशाक (कपड़े) उपहार में देते हुए प्रत्येक शिक्षक की खूबियों को बयान किया और उनकी शैक्षणिक सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षक बच्चों का मानसिक और आध्यात्मिक विकास करते हैं। जीना सिखाते हैं, तहजीब और सलीका सिखाते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक बच्चों के निर्माण और विकास के असल वास्तुकार होते हैं। उन्होंने कहा कि माता–पिता बच्चों को दुनिया में लाने का जरिया तो हैं, लेकिन बच्चों को असल इंसान, देश का सेवक और कौम व मिल्त का मददगार बनाने में मुख्य भूमिका शिक्षक ही निभाते हैं।

उन्होंने बच्चों से मुखातिब होकर कहा कि हमेशा उनके सामने अदब के साथ झुके रहें, उनकी आज्ञा का पालन करें और उनकी दुआएं लेते रहें। उन्होंने कहा कि असली उपहार शिक्षकों का अदब, इज्जत, सम्मान और रिस्पेक्ट है।इस अवसर पर सीनियर उस्ताद मौलाना अब्दुल्ला माजहिरी, प्रिंसिपल अर्शिया खातून, हरदिलअजीज टीचर, बेहतरीन योग्यता और शख्सियत की मलिका मोमिना खातून, आलिमा फाजिला आमिना इफ्फत, रिजवाना खातून, राधिका, हानिया सहित अन्य स्टाफ मौजूद रहे।

अवैध संबंध में ब्लैकमेल होने पर थानेदार ने दिया था जान: महिला समेत 3 गिरफ्तार

सूर्य प्रकाश सिंह, मृतक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। 56 साल के थानाध्यक्ष सूर्य प्रकाश सिंह ने हनीट्रैप और ब्लैकमेलिंग से परेशान होकर सुसाइड किया था। पुलिस ने रविवार दोपहर आरोपी महिला, उसके पिता और वकील को गिरफ्तार किया है। महिला लोगों को प्रेम जाल में फंसाती थी। उन्हें वीडियो कॉल करती थी। चैटिंग में अश्लील बातें करती थी। फिर ब्लैकमेल कर पैसे ऐंठती थी। आरोपी महिला ने थानाध्यक्ष सूर्य प्रकाश के साथ भी शारीरिक संबंध बनाए, फिर उन्हें ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। उनसे 1 करोड़ रुपए की डिमांड करने लगी। पैसे नहीं देने पर हाथ की नस काटने की धमकी दे रही थी। पुलिस को उसके पास से बोलेरो और 3 मोबाइल मिले हैं। पुलिस ने तीनों आरोपियों को जेल भेज दिया है।

वाल्टरगंज के थानाध्यक्ष सूर्य प्रकाश सिंह मूल रूप से आजमगढ़ के भीलमपुर छपरा गांव के रहने वाले थे। वह 4 साल बाद रिटायर होने वाले थे। परिवार में पत्नी के अलावा एक बेटा और दो बेटियां हैं। बड़ा बेटा संदीप सिंह (30) है। सूर्य प्रकाश सिंह सिद्धार्थनगर से ट्रांसफर होकर बस्ती आए थे। पहले यहां पुलिस लाइन में उन्हें तैनाती मिली थी। 18 अप्रैल, 2026 को उन्हें वाल्टरगंज थाने का इंचार्ज बनाया गया था। 29 अगस्त को वह कलेक्ट्रेट के पास स्थित अपने सरकारी घर में फंदे से लटके मिले थे। उन्होंने सुसाइड से पहले वाट्सएप पर एक स्टेटस लगाया था। इसमें लिखा था– धन–संपदा भी आवश्यक है, परंतु शांति और प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

डीआईजी संजीव त्यागी ने बताया कि आरोपी प्रियंका चौधरी, उसके पिता रामनयन चौधरी और वकील विजय प्रकाश को रविवार सुबह सदर अस्पताल के सामने से गिरफ्तार किया गया गया। पुलिस को घरवालों से पूछताछ, सर्विलांस और सीडीआर की जांच में पता चला कि थानाध्यक्ष सूर्य प्रकाश सिंह तीनों आरोपियों के संपर्क में थे। वकील विजय प्रकाश ब्लैकमेलिंग की रकम वसूलता था।

पुलिस ने बताया– वाल्टरगंज थाना क्षेत्र के गांधार में रहने वाली 32 साल की प्रियंका चौधरी का अपने पति से 10 साल पहले अलगाव हो गया था। प्रियंका मुंबई में ब्यूटी पार्लर और स्पा सेंटरों में काम करती थी। वह पैसे वाले लोगों को अपने प्यार के जाल में फंसाती थी। इसके बाद उनके वीडियो और ऑडियो बना लेती थी। फिर वाट्सऐप, वीडियो कॉल और चौटिंग के जरिए उन्हें ब्लैकमेल कर रुपए की मांगती थी।

पुलिस के मुताबिक, प्रियंका जाल में फंसाए गए लोगों को वीडियो कॉल करती थी। उन्हें अपने हाथ की नस काटकर खून निकलने का सीन दिखाती थी। इस तरह लोगों को डराकर मोटी रकम वसूलती थी। इसमें प्रियंका के पिता रामनयन चौधरी और वकील विजय प्रकाश यादव उसका साथ देते थे। दोनों ब्लैकमेलिंग की रकम वसूलते थे। वसूली गई रकम में प्रियंका के अलावा उन्हें भी हिस्सा मिलता था। जांच में यह बात भी सामने आई कि आरोपियों ने अन्य तीन लोगों से भी 24 लाख रुपए वसूले थे।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के पैतृक घर की सुरक्षा पर कांग्रेस नेता महेन्द्र ने उठाये सवाल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कांग्रेस आर.टी.आई. विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष और पूर्वान्चल प्रभारी महेन्द्र श्रीवास्तव ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के पैतृक गांव चंदौली जिले के बभौरा गांव में वीआईपी व्यवस्था के नाम पर भारी पुलिस बल तैनाती की जांच कराने और टैक्सपेयर्स के पैसों की भारी बर्बादी पर चिन्ता व्यक्त करते हुये इसके वसूली कराये जाने की मांग किया है।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से कांग्रेस नेता महेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि एक तरफ जहां थानों और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए पुलिस बल की भारी कमी बनी रहती है, वहीं दूसरी तरफ केवल एक खाली पड़े वीआईपी मकान की रखवाली के लिए 15 जवानों का पूरा पीएसी कैंप 24 घंटे तैनात रखना प्रशासनिक संसाधनों का गंभीर दुरुपयोग है। जनता की गाढ़ी कमाई से मिलने वाले टैक्स के पैसों से चलने वाले इन जवानों का इस तरह एक सूने मकान पर पहरा देना कई बड़े और गंभीर सवाल खड़े करता है। यह वीआईपी कल्चर की पराकाष्ठा और सरकारी धन का खुला अपव्यय है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि

–जनता के धन की बरबादी न करें वीआईपी लोग

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के पैतृक घर में पिछले 20 साल से कोई भी परिवार या सदस्य नहीं रहता है, इसके बावजूद उस सूने घर की सुरक्षा में पिछले दो दशकों से पीएसी का पूरा कैम्प तैनात है। इस पुश्तैनी मकान पर 15 पीएसी जवान चौबीसों घंटे ड्यूटी दे रहे हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण और चिन्ताजनक है। कांग्रेस नेता ने कहा कि अच्छा हो कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह स्वयं इसे लेकर गंभीर हो और सुरक्षा हटाने के साथ ही वे अब तक पिछले 20 वर्ष में जो धनराशि व्यय हुआ है उसे सरकारी कोष में जमा करा दें।

मन्नत फाउंडेशन की पहल: अर्पित पाण्डेय के घर पहुंची मदद

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अयोध्या जनपद के बीकापुर विधानसभा क्षेत्र के बरगदिया गांव निवासी अर्पित पाण्डेय से जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद उनकी मदद के लिए समाजसेवियों और जनप्रतिनिधियों के आगे आने का सिलसिला जारी है। इसी कड़ी में बस्ती की मन्नत फाउंडेशन की अगुवाई में कई समाजसेवी बरगदिया स्थित अर्पित पाण्डेय के घर पहुंचे और परिवार की स्थिति देखकर हर संभव सहयोग का भरोसा दिलाया।

मन्नत फाउंडेशन के अध्यक्ष डा. हेमंत पाण्डेय के नेतृत्व में समाजसेवियों ने अर्पित पांडे के परिवार से मुलाकात की। परिवार की परिस्थितियों को देखकर मौजूद लोगों की आंखें नम हो गईं। इसके बाद परिवार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए खाद्य सामग्री, कपड़े, घरेलू उपयोग की वस्तुएं तथा आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई। सहयोग के रूप में गेहूं, चावल, आटा, तेल, चीनी, चायपत्ती, दाल, साड़ी, कपड़े सहित घरेलू उपयोग का आवश्यक सामान दिया गया। इसके साथ ही अर्पित पांडे को नगद आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई, ताकि परिवार की तत्काल जरूरतों को पूरा करने में मदद मिल सके।इस सेवा कार्य में प्रैक्सिस विद्यापीठ के प्रबंधक सुशांत पाण्डेय वरिष्ठ समाजसेवी अपूर्व शुक्ला, युवा नेता अजय पाण्डेय, कुणाल पाण्डेय, संजय पांडेय, सोनू पाठक, दुर्गेश चौधरी, देवनारायण पांडेय और राजकुमार त्रिपाठी सहित अन्य लोगों ने सहयोग किया। मन्नत फाउंडेशन के अध्यक्ष डा. हेमंत पाण्डेय ने कहा कि संस्था लगातार जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए कार्य कर रही है और भविष्य में भी जहां आवश्यकता होगी, वहां हरसंभव सहयोग पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।

बाबा नीम करौली की भक्ति में रंगा क्रिसेंट मॉल, भाजपा नेता अरविन्द पाल ने 101 लोगों को दिखाई 'हनुमान अंश'

–पद यात्रा कर जयघोष के साथ सिनेमा हाल पहुंचे श्रद्धालु

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बाबा नीम करौली के जीवन और आध्यात्मिक व्यक्तित्व पर आधारित फिल्म 'हनुमान अंश' देखने के लिए रविवार को क्रिसेंट मॉल स्थित सिनेमैक्स सिनेमा में श्रद्धा और उत्साह का माहौल देखने को मिला। वरिष्ठ भाजपा नेता एवं 310 बस्ती सदर विधानसभा क्षेत्र से प्रबल दावेदार इंजीनियर अरविन्द पाल की पहल पर 101 लोगों ने सामूहिक रूप से फिल्म का प्रदर्शन देखा। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं, समर्थकों और स्थानीय लोगों की बड़ी संख्या में सहभागिता रही।

कार्यक्रम की शुरुआत रौता चौराहे के निकट स्थित भाजपा नेता अरविंद पाल के कैंप कार्यालय से हुई। यहां एकत्र हुए श्रद्धालुओं और समर्थकों ने बाबा नीम करौली के जयघोष के साथ पदयात्रा शुरू की। हाथों में आस्था और मन में उत्साह लिए लोग आगे बढ़े। पदयात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए रोडवेज पहुंची, जहां से सभी लोग क्रिसेंट मॉल स्थित सिनेमैक्स सिनेमा पहुंचे। यहां सभी ने एक साथ फिल्म 'हनुमान अंश' का प्रदर्शन देखा।

फिल्म देखने के बाद भाजपा नेता इंजीनियर अरविंद पाल ने कहा कि बाबा नीम करौली का जीवन केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्व में सेवा, भक्ति, मानवता और सनातन परंपरा के गहरे संदेश दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को देश की महान आध्यात्मिक परंपराओं और संतों के जीवन से परिचित कराने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि बाबा नीम करौली के जीवन पर आधारित फिल्म 'हनुमान अंश' प्रत्येक व्यक्ति को देखनी चाहिए। कहा कि जो भी जनप्रतिनिधि और सक्षम लोग हैं, उन्हें अधिक से अधिक लोगों को ऐसी प्रेरणादायी फिल्में दिखाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा और संतों के विचारों को बेहतर ढंग से समझ सके।

इं. अरविन्द पाल ने कहा कि सनातन धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन जीने की व्यापक पद्धति और आध्यात्मिक चेतना का आधार है। उन्होंने कहा कि बाबा नीम करौली जैसे संतों का जीवन सेवा, समर्पण, आस्था और मानव कल्याण का संदेश देता है। ऐसी फिल्मों के माध्यम से इन विचारों को समाज के अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। कहा कि सनातन धर्म की परंपरा, आस्था और आध्यात्मिक शक्ति को समझने के लिए युवाओं को भारतीय संतों और महापुरुषों के जीवन से जुड़ी सामग्री को जानना चाहिए। उनके अनुसार, 'हनुमान अंश' जैसी फिल्में नई पीढ़ी को अपनी आध्यात्मिक विरासत से जोड़ने का माध्यम बन सकती हैं।

फिल्म देखने पहुंचे लोगों ने भी 'हनुमान अंश' की सराहना की। लोगों ने कहा कि बाबा नीम करौली के जीवन पर आधारित फिल्म के माध्यम से उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व, विचारों और जीवन–दर्शन को समझने का अवसर मिला। लोगों ने 101 लोगों को फिल्म दिखाने की पहल के लिए इंजीनियर अरविंद पाल के रचनात्मक पहल को सराहा। बाबा नीम करौली के जयघोष से वातावरण भक्तिमय बना रहा। पदयात्रा से लेकर फिल्म प्रदर्शन तक लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला। आयोजन में श्रद्धा के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश भी देखने को मिला।

इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष पवन कसौधन, प्रमोद पाण्डेय, सत्येंद्र सिंह 'भोलू, विवेकानन्द शुक्ला, रमेश अग्रहरि, परमात्मा यादव, सुग्रीव पाल, राजेन्द्र यादव, सूर्य नारायण पाल, हरिकेश पाल, दिनेश चौधरी, अतुल पाल, गिरजेश कसौधन, मलगु पाण्डेय, पवन पाल, मदनलाल, ब्रह्मानंद शुक्ला सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु, समर्थक और स्थानीय लोग मौजूद रहे।

पढाई के साथ व्यवसायिक कौशल से जुड़ेंगें छात्र

लखनऊ (आभा)। योगी सरकार ने समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय स्कूलों के स्टूडेंट्स को स्कूली शिक्षा के साथ व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण देने की तैयारी पूरी कर ली है। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन ने वित्तीय वर्ष 2026–27 में 'प्रोजेक्ट प्रवीण' के तहत प्रदेश के 3 हजार से अधिक स्टूडेंट्स को विभिन्न रोजगारपरक क्षेत्रों में ट्रेंड करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। ट्रेनिंग का लक्ष्य 31 संस्थाओं को सौंपा गया है। इसके लिए चुनी गई सभी संस्थाओं को ट्रेनिंग सेंटर बनाने, उनका अनुमोदन कराने, स्टूडेंट्स का रजिस्ट्रेशन करने और बैच बनाने की प्रक्रिया निर्धारित समयसीमा में पूरी करनी होगी। 30 सितंबर 2026 तक सभी ट्रेनिंग सेंटरों पर ट्रेनिंग शुरू करना अनिवार्य किया गया है।

यूजीसी के नये कानून की वापसी सहित शिक्षा में सुधार को लेकर मेधा का धरना जारी

-मांगे न मानी गयीं तो निर्णायक आन्दोलन- दीनदयाल त्रिपाठी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मेधा पार्टी द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार, यूजीसी के नये कानून की वापसी सहित 7 सूत्रीय मांगों को लेकर गांधीकला भवन परिसर में बापू प्रतिमा के निकट चल रहा धरना रविवार को 14 वें दिन भी जारी रहा। मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता दीन दयाल त्रिपाठी ने कहा कि पार्टी गरीबों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार दिलाने के अभियान को आगे बढ़ा रही है। सरकारों ने शिक्षा में अपेक्षित सुधार न किया तो पार्टी निर्णायक आन्दोलन को बाध्य होगी।

मेधा पार्टी की प्रमुख मांगों में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में एकल पदों पर आरक्षण व्यवस्था समाप्त किये जाने यूजीसी रेग्यूलेशन 2026 को वापस लिये जाने, दशमोत्तर कक्षाओं में सभी जातियों के विद्यार्थियों को आर्थिक आधार पर शुल्क प्रतिपूर्ति एवं छात्रवृत्ति की सुविधा, निजी स्कूलों में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत मुफ्त दाखिले को सरल बनाना तथा शिक्षा–प्रशिक्षण संस्थानों में समान अवसर सुनिश्चित करना, अनुसूचित जाति, अनसूचित जन जाति के गरीब छात्रों को दशमोत्तर कक्षाओं में निजी शिक्षण, प्रशिक्षण संस्थानों में निःशुल्क प्रवेश दिये जाने आदि की शामिल है। श्री तिवारी ने कहा कि शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए पार्टी लगातार संघर्ष करती रहेगी। गरीब बच्चों को बेहतर शिक्षा और उनके अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष जारी रहेगा।

धरने के 14 वें दिन मुख्य रूप से बापू प्रतिमा के निकट मुख्य रूप से उमेश पाण्डेय मुन्ना, पं. सुनील भट्ट, सन्तोष शुक्ल, विशाल सिंह, गिरीश चन्द्र गिरी, नागेन्द्र मिश्र, दीपक, वृजेश द्विवेदी, हर्षित तिवारी, अजय कुमार चौधरी, राहुल त्रिपाठी, जावेद अहमद, विजय कुमार पाल, दिनेश कुमार चौधरी, दीपक, देशबंधु शुक्ला, लक्ष्मण शुक्ल, मो. अनीस, निसार चौधरी, शकील खान, के साथ ही मेधा के अनेक पदाधिकारी, सदस्य और विभिन्न संगठनों के लोग शामिल रहे।

योगी के संकल्पों को साकार करने के लिए एकजुट हों कार्यकर्ता – विनय सिंह

–हिन्दू युवा वाहिनी की बैठक में गौ–रक्षा, धर्म–रक्षा, संगठन की मजबूती पर मंथन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। । हिन्दू युवा वाहिनी के परशुरामपुर ब्लॉक इकाई की आवश्यक बैठक रविवार को हनुमान मंदिर सिकन्दरपुर में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता तहसील अध्यक्ष साहब पाठक और संचालन विनोद गुप्ता ने किया।

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विनय सिंह ने कहा कि हिन्दू युवा वाहिनी का प्रत्येक कार्यकर्ता परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज के संकल्पों पर खरा उतरने के लिए पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करे। उन्होंने कहा कि गौ–रक्षा, धर्म–रक्षा तथा मठ–मंदिरों की सुरक्षा समाज और संगठन से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्ता की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने तथा समाजहित में निरंतर सक्रिय रहने का आह्वान किया। विनय सिंह ने कहा कि सनातन धर्म की रक्षा और मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर निर्माण के संकल्प को आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 2027 में योगी जी के नेतृत्व में सरकार को पुनः मजबूत करना आवश्यक है।

विशिष्ट अतिथि जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष जयप्रकाश जायसवाल और विजय द्विवेदी ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि सभी कार्यकर्ता परम पूज्य महाराज जी की तरह अडिग रहकर संगठन एवं समाज के हित में कार्य करें।कहा कि हिन्दू बहन–बेटियों के मान–सम्मान के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ स्वीकार नहीं किया जाएगा। बैठक में संगठन के आगामी कार्यक्रमों एवं कार्ययोजना को लेकर भी चर्चा की गई। पदाधिकारियों ने संगठन को और अधिक मजबूत एवं सक्रिय बनाने का संकल्प लिया।

बैठक में जिला कार्यालय प्रभारी धर्मेंद्र कुमार, जिला मंत्री अजय कन्नौजिया, ब्लॉक संयोजक शनि कुमार, अध्यक्ष सौरभ गुप्ता, उपाध्यक्ष विजय गुप्ता, अमन कन्नौजिया, रोशन लाल, प्रेम कुमार, ब्लॉक महामंत्री सुमित गुप्ता, मंत्री रामअवतार, विनय विश्वकर्मा, अंकित शर्मा, लकी कुमार, राहुल सोनकर, जगदीश चौधरी, रवि साहू सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को केसरिया अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यकर्ताओं ने संगठन की विचारधारा एवं समाजहित के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

सपा की मासिक बैठक में बनी बूथ प्रबन्धन की रणनीति

–सबके सहयोग से बनेगी प्रदेश में सपा की सरकार– महेन्द्रनाथ यादव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को समाजवादी पार्टी कार्यालय पर सपा जिलाध्यक्ष और बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव की अध्यक्षता में मासिक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद के सभी पांचों विधानसभा क्षेत्र की बूथवार सघन समीक्षा की गई। बैठक में जिलाध्यक्ष महेन्द्रनाथ यादव ने पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं का आवाहन किया कि अभी से आगामी 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुट जाय। कहा कि चुनाव का बिगुल बजने का इंतजार न करें, अपने–अपने बूथों पर निरन्तर सजग रहे, कहा कि बूथ जीत गये तो चुनाव जीत जायेंगे। जनता बदलाव का मन बना चुकी है। सबके सहयोग से प्रदेश में सपा की सरकार बनना तय है।

जिलाध्यक्ष महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि प्रदेश की जनता भाजपा कुशासन से ऊब चुकी है, सत्ता और व्यवस्था परिवर्तन के लिये सपा नेता घर–घर जाकर लोगों से संवाद बनाये और पीड़ितों की मदद करें। यह भी ध्यान रहे कि मतदाता सूची पर नजर रखे और कोई मतदाता मतदान से वंचित न होने पाये। यह चुनाव देश, प्रदेश का भविष्य तय करेगा।

सपा की मासिक बैठक को विधायक कविन्द्र चौधरी 'अतुल' राजाराम यादव, मो. स्वालेह, जावेद पिण्डारी, मो. सलीम, गगन पाण्डेय, आलोक यादव, गंगा यादव, प्रवीण पाठक, अखिलेश यादव, घनश्याम मिश्रा, दीनानाथ चौरसिया, नीलू सिंह, राजेन्द्र चौधरी, पवन यादव, आर.डी. निषाद, युनूस आलम, राम सिंह यादव, अशोक यादव, डब्बू यादव, आदि ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में जीत सुनिश्चित होने और सपा की मजबूत सरकार बनाने के लिये जमीनी धरातल पर कड़े परिश्रम की जरूरत है। कहा कि बूथ जीत गये तो चुनाव जीत जायेंगे और जन सरोकारों के लक्ष्य पूरे होंगे।

बैठक में मुख्य रूप से सीताराम चौहान, सनी मिश्र, जमील अहमद, हरीश गौतम, रवि यादव, संजय गौतम, रामजीत प्रधान, राम सिंगार यादव, आदित्य विक्रम सिंह, नित्यराम चौधरी, गुलाब चन्द्र सोनकर, सुशील यादव, जरसी यादव, रामशंकर निराला, डा. राम प्रकाश सुमन, अनिल निषाद, हरेश्याम विश्वकर्मा, मंशाराम कन्नौजिया, अकबर अली, बैजनाथ शर्मा, रजनीश पाठक, देवनाथ यादव, हिमांशु सिंह, रजनीश यादव, कुलदीप मौर्या, बेलाल अहमद, मोनू यदुबंश, सुरेश यादव के साथ ही सपा के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

“मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता”–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 7 सितम्बर 2026 सोमवार

सम्पादकीय

विकास के आंकड़े और आम आदमी

देश की अर्थव्यवस्था ने वित्त वर्ष 2026–27 की पहली तिमाही में 7.8 फीसद की वास्तविक विकास दर दर्ज की है। पहली नजर में यह आंकड़ा निश्चित रूप से प्रगतिशील दिखाई देता है। सरकार के लिए यह आर्थिक मजबूती का प्रमाण है और यह बताने का अवसर भी कि कठिन वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी गति बनाए हुए है। मगर किसी भी विकास का वास्तविक मूल्यांकन केवल विकास दर के आधार पर नहीं किया जा सकता। सवाल यह है कि इस विकास की गुणवत्ता क्या है, इसका लाभ किसे मिल रहा है और आम आदमी के जीवन में इसका कितना असर दिखाई दे रहा है। जब तक समाज में अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अन्य बुनियादी सुविधाएं नहीं पहुंचतीं, तब तक विकास को वास्तविक नहीं माना जा सकता। आर्थिक समृद्धि तब तक अधूरी है, जब तक वह लोगों की क्षमताओं में नहीं बदलती। विकास को सिर्फ सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़ों तक सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि आंकड़े केवल आर्थिक उत्पादन को दर्शाते हैं, जबकि वास्तविक विकास का संबंध मानव कल्याण और जीवन की गुणवत्ता से है।

अहम सवाल यह है कि पिछले वर्ष के आर्थिक आकार में कमी क्यों आई और इसका 7.8 फीसद की वर्तमान विकास दर पर कितना असर पड़ा? वर्ष 2011–12 के पुराने आधार वर्ष में वित्त वर्ष 2025–26 की पहली तिमाही का सकल घरेलू उत्पाद 86.05 लाख करोड़ रुपए था, जो वर्ष 2022–23 के नए आधार वर्ष में घटकर लगभग 80 लाख करोड़ रुपए रह गया। पुरानी और नई शृंखला की सीधी तुलना उचित नहीं है, लेकिन इतने बड़े बदलाव की वजह और वर्तमान विकास दर पर उसके प्रभाव को सरकार की ओर से स्पष्ट करने की जरूरत है।

पहली तिमाही अप्रैल से जून तक तीन माह की थी। पश्चिम एशिया का संकट फरवरी के अंत से शुरू हो चुका था, लेकिन घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि मई के मध्य और अंतिम सप्ताह में चार चरणों में हुई। यानी तिमाही का लगभग पहला डेढ़ महीना घरेलू ईंधन मूल्य वृद्धि के पूरे प्रभाव से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहा और कीमत वृद्धि का दबाव बाद के हिस्से में आया। क्या यह सरकार की एक रणनीति नहीं थी कि कीमतों में वृद्धि का असर तिमाही के शुरुआती हिस्से पर कम दिखाई दे और उसका व्यापक प्रभाव बाद की अवधि में सामने आए?

देश में 31 अगस्त को जिस दिन 7.8 फीसद की विकास दर सामने आई, उसी दिन सूचकांक 307 अंक यानी 0.40 फीसद और निफ्टी 0.39 फीसद नीचे बंद हुए। इसे केवल सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े की प्रतिक्रिया कहना उचित नहीं होगा, क्योंकि वैश्विक बाजार, तेल और अमेरिकी ब्याज दरों को लेकर भी दबाव था। फिर भी मजबूत विकास दर के बावजूद बाजार में व्यापक उत्साह क्यों नहीं दिखाई दिया, यह प्रश्न बना हुआ है।

इसी के साथ रुपए में गिरावट का क्रम भी जारी है और वह लगभग 95 रुपए प्रति डालर के आसपास है। यदि अर्थव्यवस्था तेजी से मजबूत हो रही है, तो हमारी मुद्रा अभी भी तेल की कीमतों, विदेशी पूंजी और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में क्यों रहती है? स्पष्ट है कि आर्थिक मजबूती केवल उत्पादन बढ़ने का नाम नहीं, बल्कि अपनी मुद्रा और अर्थव्यवस्था को बाहरी झटकों से बचाने की क्षमता भी है।

आम आदमी के लिए 7.8 फीसद की विकास दर का सबसे सीधा परीक्षण उसकी रसोई और रोजमर्रा के खर्च में होता है। सरकारी कागजों में देश में औसत महंगाई दर 4.45 फीसद हो सकती है, लेकिन एक परिवार का बजट किसी औसत आंकड़े से नहीं चलता। जुलाई में खाद्य महंगाई 5.52 फीसद रही। अदरक, लहसुन और प्याज जैसी रोजमर्रा की वस्तुओं में तेज वृद्धि दर्ज की गई। विकास दर के इस आंकड़े का दूसरा बड़ा प्रश्न रोजगार से जुड़ा है। बीती जुलाई में बेरोजगारी दर 5.1 फीसद रही, जबकि श्रमबल भागीदारी दर 55.4 फीसद थी। केवल रोजगार की संख्या पर्याप्त नहीं है। सवाल यह है कि क्या विकास युवाओं के लिए पर्याप्त स्थायी और सम्मानजनक रोजगार पैदा कर रहा है। यदि अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो रही है, लेकिन संगठित निजी क्षेत्र में रोजगार की गति कमजोर है और छोटे कारोबार लागत तथा मांग के दबाव में हैं, तो विकास की गुणवत्ता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। भारत की बड़ी आबादी आज भी छोटे व्यापार, स्वरोजगार और अनौपचारिक गतिविधियों से जुड़ी है। इसलिए विकास का वास्तविक मूल्यांकन इस बात से भी होना चाहिए कि इन वर्गों की आय और कारोबार में क्या बदलाव आया।

देश की प्रति व्यक्ति आय अभी भी लगभग 2,700 डालर के आसपास है। दूसरी ओर, आय के वितरण में असमानता का प्रश्न भी गंभीर है। अगर राष्ट्रीय आय का बड़ा हिस्सा ऊपर के सीमित वर्ग के पास जा रहा है, तो ऊंची विकास दर अपने आप व्यापक आर्थिक समृद्धि का प्रमाण नहीं बन जाती। विकास तभी सार्थक है, जब उसकी पहुंच समाज के बड़े हिस्से तक हो और लोगों की क्रय शक्ति बढ़े।

जाहिर है, सरकार सकल घरेलू उत्पाद के इस आंकड़े को उपलब्धि के रूप में सामने रखेगी, विपक्ष इसकी कमियों और विश्वसनीयता पर सवाल उठाएगा, अर्थशास्त्री गणना पद्धति पर बहस करेंगे तथा सामाजिक माध्यमों पर इसके पक्ष और विपक्ष में लंबी बहस चलेगी। यह सब लोकतंत्र का हिस्सा है, लेकिन आम आदमी इन बहसों में बहुत देर तक नहीं उलझता। उसके लिए 7.8 फीसद केवल एक आंकड़ा है। असल में वह देखता है कि उसकी आमदनी बढ़ी या नहीं, रोजगार मिला या नहीं, छोटा कारोबार चला या नहीं, घर का खर्च कितना बढ़ा और महीने के अंत में उसकी बचत कितनी रही। अगर उसकी जिंदगी में बदलाव नहीं आया, तो वह इस आंकड़े को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़कर नहीं देखेगा।

आखिरकार अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी परीक्षा यही है कि उसके आंकड़े आम आदमी के जीवन में कितने प्रभावी दिखाई देते हैं। उच्च जीडीपी यह नहीं बताती कि देश की संपत्ति का वितरण सभी लोगों के बीच समान रूप से हुआ है या वह कुछ ही लोगों के पास केंद्रित है। यह किसी नागरिक के स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, शिक्षा के स्तर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे गैर–आर्थिक पहलुओं को भी नहीं दर्शाती है। 7.8 फीसद की विकास दर सरकार के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है, लेकिन यह सही मायने में तभी अर्थपूर्ण है, जब इसका असर देश के आम नागरिक की आय, रोजगार, बचत और क्रय शक्ति में दिखाई दे।

कॅरियर की अंधी दौड़ में हांफती युवा पीढ़ी!

—संजय द्विवेदी —

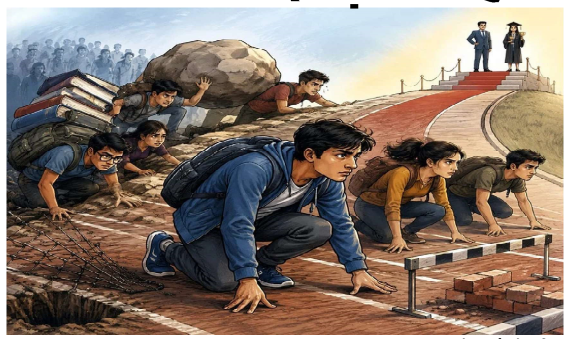

भारत युवाओं का देश है। जाहिर है ऐसे देश की चिंताएं बहुत अलग होती हैं। उसकी ज्यादातर आबादी को शिक्षा, रोजगार और सुंदर जीवन की कामना होती है। उनकी महत्वाकाक्षाएं, अवसरों की होड़ और दौड़। पाने की खुशी और न मिलने का आक्रोश सब साझा होते हैं। करियर में सफल होने, जल्दी और ज्यादा पाने की कामनाएं इस दौर का मूल्य हैं। ऐसे में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को गहरी चुनौती है। संकट के बादल गहरे हैं। समाधान के सूत्र न्यूनतम।

सरकारों में नौकरियों के दरवाजे सिकुड़ रहे हैं। ज्यादातर नौकरियां निजी क्षेत्रों में ही हैं। नौ से पांच बजे की पक्की नौकरियां अब स्वप्न ही हैं। उनकी जगह गिग इकोनामी (फ्री लांस, कांट्रैक्ट वर्क) ने ले ली है। आर्थिक स्वतंत्रता की तो छोड़िए यह माडल भविष्य की अनिश्चितता और वित्तीय अस्थिरता भी ला रहा है, जिसके नाते बढ़ता मानसिक तनाव और अवसाद संकट को गहरा कर रहा है। हिंदुस्तान अलग तरह से चलता रहा है। परिवार इसकी प्राणवायु रहे हैं। परिवार का कोई एक आदमी नौकरी पर रहता था, शेष अपने घर–इलाके–गांव में बैठकर स्थानीय स्तर पर जो कर सकते थे करते थे। परिवार की छाया में सुरक्षा थी, संरक्षण था, बच्चों को संस्कारित करने के पारिवारिक उपक्रम थे। नई व्यवस्था ने एक परिवार में कई परिवार खड़े कर दिए हैं। इससे एक की जगह अब चार परिवार, चार चूल्हे और चार व्यवस्थाएं खड़ी करनी पड़ रही है। आप कितना भी कमा रहे हैं वह कम ही है। इसने नई पीढ़ी को ईएमआई के दुष्चक्र में फंसा कर नई व्यवस्थाओं का गुलाम बना दिया है। परिवार व्यवस्था भारत की संस्कृति का आधार रही है। वह संस्कारशाला भी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे सामने नई चुनौतियां पेश की हैं। वे बेहतर सहायक से ज्यादा तनाव के वाहक हैं। युवाओं में एआई के कारण नौकरियां जाने और खुद के अप्रासंगिक हो जाने का भय बैठ गया है। वे इस पूरे दृश्य को बहुत चिंता से देख रहे हैं। री–स्किलिंग का दबाव उन्हें गहरे भय में डाल रहा है। इससे मानसिक थकान होना स्वाभाविक ही है। इस समय सबसे बड़ी चिंता कार्य और जीवन संतुलन की है। वर्क फ्राम होम और डिजिटल कनेक्टिविटी ने सारा कुछ बदलकर रख दिया है। काम के घंटे अब प्रायः 24 घंटे ही हैं। देर रात तक ई–मेल, रिर्पोट्स और मैसेज का जवाब देते हुए युवा ‘आलवेज आन’ मोड में रहते हैं। जिससे पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत समय और नींद सब प्रभावित हो रही है। बर्नआउट की बढ़ती दर, काम के अनिश्चित घंटे, स्पर्धा का वातावरण और टारगेट पूरे करने का दबाव साथ चलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्लूएचओ) ने बर्नआउट को प्रोफेशनल बीमारी मान लिया है। यह अब भारतीय कारपोरेट जगत में एक अनिवार्य समस्या बन गयी है।

सोशल मीडिया ने समाज में अलग तरह की स्पर्धा की छवियां प्रस्तुत की हैं। अपने सुखद, आनंद के क्षणों को वायरल करने की बीमारी दूसरे की पीड़ा का कारण बन जाती है। किसी की बड़ी पदस्थापना, उसकी पार्टियां, रील्स, पर्यटन की तस्वीरें, महंगी जीवनशैली का विज्ञापन करना, सफलताओं के हाईलाइट्स देखकर तुलना और स्पर्धा की बातें तेज होती हैं। इससे हीनभावना और तनाव का जन्म भी होता है। परिजन और बच्चे भी अपने पालकों से ऐसी ही जीवन शैली की अपेक्षा करते हैं। ऐसे समय में युवाओं के लिए तनाव प्रबंधन की विधियां समझने और उन्हें जीवन की ठोस सच्चाइयों से जोड़ने की जरूरत है। योग, ध्यान के अनेक अभ्यास जीवन में शांति ला सकते हैं। जिंदगी के हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकते हैं। रील्स की तुरंतवादी जीवनशैली और जीवन के सतत संघर्ष को समझने की जरुरत है।सोशल मीडिया से प्रक्षेपित हो रही छवियों से प्रभावित होने के बजाए, लोगों के संघर्ष और उससे उपजी सफलताओं के पाठ भी पढ़े जाने चाहिए।

नए समय ने युवाओं को उद्यमिता के गुर दिए हैं। यह पीढ़ी जोखिम उठाने और सफलताओं के नए शिखर छूने वाली पीढ़ी है। इसके मंत्र अलग हैं। वे जल्दी से सफलताओं के नए क्षितिज को छूना चाहते हैं। छू भी रहे हैं। कम आयु में उनकी सफलताएं विस्मित करने वाली हैं। उनके स्टार्टअप धूम मचा रहे हैं। सफलता की बड़ी कहानियां लिख रहे हैं। प्रेरित कर रहे हैं। इसके दूसरे पक्ष का विचार भी जरूरी है। हमें पता है कि 90 प्रतिशत से अधिक स्टार्टअप शुरुआती सालों में ही अन्यान्य कारणों से विफल हो जाते हैं। विफलता का डर, निवेशकों का दबाव, फंडिंग का संकट संस्थापकों और शुरुआती कर्मचारियों में मानसिक तनाव पैदा कर ही देता है।

इतने बड़े देश में हर साल लाखों युवा हाथ काम मांगने के लिए खड़े हो जाते हैं। उनके पास डिग्रियां भी होती हैं। किंतु वे कौशल युक्त नहीं होते। वे डिग्रीधारी हैं किंतु किसी काम के नहीं हैं। बाजार की जरूरतें अलग हैं, उनके कौशल अलग हैं। ऐसे में बहुत योग्य लोगों को भी अपेक्षित नौकरी नहीं मिल पाती, अच्छे वेतन की तो जाने ही दीजिए। युवाओं के ज्यादातर संकट वास्तविक हैं। वे जानकारी से भरपूर हैं, उनके पास अवसरों का जनतंत्र है। आकांक्षाओं की बाढ़ है। वे सूचनाओं से लदे–फंदे हैं। यह ज्यादा सूचनाएं भी दुख और भ्रम का कारण बन रही हैं। आकांक्षाओं का बड़ा आकाश उतनी ही गहरी निराशा लेकर लाता है। यह साधारण नहीं है कि आईआईटी के विद्यार्थी आत्महत्या कर रहे हैं। ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का अवसान उनके परिवार,देश और समाज के लिए भी बड़ी क्षति है । परीक्षाओं में मिलती असफलताएं, लीक होते प्रश्नपत्र, परीक्षाओं की नष्ट होती शुचिता, सरकारी– प्रशासनिक तंत्र की कदाचार रोकने की विफलताओं ने युवाओं को गहरी चिंताएं दी हैं। शिक्षा के निजीकरण और उससे उपजे बाजारीकरण ने हालात बहुत बदल दिए हैं। महंगी शिक्षा के लिए परिवार कर्ज में डूब रहे हैं। प्रतिभा पलायन का संकट तो है ही। समाज में यह बात बहुत गहरे पैठ रही है इस देश में प्रतिभाशाली युवाओं की जगह नहीं बची है। यह तथ्य नहीं किंतु गहराई से फैलती धारणा है। आप बिना जुगाड़ के इस व्यवस्था में सफल नहीं हो सकते। किसी राष्ट्र जीवन में ऐसी धारणाएं ठीक नहीं हैं। हमें समझना होगा कि राष्ट्र से हम सबकी सामूहिक आकांक्षाएं,साझे प्रयासों से ही फलीभूत होंगी। भारत की आजादी के आठ दशक अभूतपूर्व प्रगति, एकत्व और जीवंत लोकतंत्र के प्रमाण हैं। हर राष्ट्र जीवन में चुनौतियां होती हैं, उससे जूझकर हम अपने संकटों का हल खोजते हैं। देश की युवा पीढ़ी भी अपने संकटों के बीच इस राष्ट्र जीवन के समक्ष उपस्थित प्रश्नों के ठोस और वाजिब हल जरुर तलाशेगी। युवा शक्ति की तेजस्विता, नवाचारों और आत्मविश्वास को देखकर यह विश्वास सहज ही होता है।

चीन की नाकामी और जलप्रलय

—पुष्परंजन—

हाल ही में नेपाल–तिब्बत सीमा पर आई विनाशकारी बाढ़ ने चीन के आपदा प्रबंधन सिस्टम, ग्लेशियल लेक निगरानी और समय पर चेतावनी प्रणाली की गंभीर खामियां उजागर की हैं। पहले द्विपक्षीय मीटिंग में भी चीन के अधिकारियों ने सूचना साझा करने में पारदर्शिता नहीं दिखाई। वहीं अब अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने की उसकी कोशिश जारी है। चीनी सरकारी प्रचार तंत्र समय पर सूचनाएं देने में चूक पर लीपापोती में लगा है। यह परस्पर समझौतों पर अमल में नाकामी भी दर्शाता है। इस आपदा से नेपाल में जान और माल का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है, अब चुनौती पुनर्निर्माण की है जिस पर अरबों डॉलर खर्च का अनुमान है।

चीन अक्सर ‘मैत्रेयी ब्रिज’ को लेकर ‘चौड़ा’ होता था, कि दुनिया वालो देखो–हमने स्टेट ऑफ आर्ट पेश किया है। आठ जुलाई 2025 को लेंडे नदी में आई बाढ़ इस नेपाल और चीन को जोड़ने वाले ‘स्टेट–ऑफ–द–आर्ट’ के रूप में घोषित मितेरी पुल को बहा ले गई। तब कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई थी। इस साल 1 जनवरी को पोर्ट को फिर से बनाने और फिर से खोलने में लगभग छह महीने लगे। आठ महीने बाद, मितेरी पुल पोर्ट फिर से तबाह हो गया है। अगर ‘स्टेट–ऑफ–द–आर्ट बॉर्डर फैसिलिटी’ 14 महीनों में दो बार तबाह हो गई, तो यह साइट चुनने, घटिया इंफ्रास्ट्रक्चर कंस्ट्रक्शन और तिब्बत में ग्लेशियल लेक मॉनिटरिंग और अर्ली–वॉर्निंग सिस्टम की पूरी तरह से नाकामी के बारे में गंभीर सवाल खड़े करता है।

जिस चीन को साइंस–टेक्नोलॉजी में अमेरिका–रूस से टक्कर लेने वाला हम मानते रहे, वो इस महाआपदा में बुरी तरह से एक्सपोज हुआ है। चीन का प्रोपेगंडा तंत्र बजाय समय पर सूचनाओं को देने में चूक को स्वीकार करने के नेपाल को भेजे जाने वाली सहायता का ढोल पीटने में लगा हुआ है। राष्ट्रपति शी मिस्र गए, उसका कवरेज दिखाने और उससे पहले शंघाई कोऑपरेशन की शिखर बैठक में शी की शिरकत का गुणगान करके नेपाल में चीन की नाकामियों को ढकने का प्रयास वहां का सरकार नियंत्रित मीडिया कर रहा है। वहीं चीनी सरकार ने किसी भी जवाबदेही से इनकार किया है।

गत 27 अगस्त को नेपाल में चीनी एम्बेसी ने फेसबुक पर एक बयान जारी किया, जिसमें चेतावनी न देने या ऊपर की तरफ बांध टूटने से तबाही लाने के आरोपों को ‘फेक न्यूज’ बताया गया। एम्बेसी के बयान में लिखा था, ‘आरोप लगाने से कुछ नहीं होता। सहयोग से जानें बचती हैं।’ ह्यूमन राइट्स ग्रुप्स के मुताबिक, जो लोकल तिब्बती विदेशी पत्रकारों से बात करने या ऑनलाइन अपने इंडिपेंडेंट अकाउंट शेयर करने की कोशिश करते हैं, उन्हें तुरंत हिरासत में लिया जाता है या गिरफ्तार किया जाता है। बीते 26 अगस्त को ‘तिब्बत मडस्लाइड’ थोड़ी देर के लिए ट्रेंड हुआ, लेकिन अगली सुबह घरेलू मौतों का आंकड़ा तीन लोगों की मौत और 558 लोगों के लापता होने पर तुरंत स्थिर हो गया। आठ दिन बाद सरकारी न्यूज एजेंसी शिन्हुआ ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में 21 लोगों की मौत को स्वीकार किया।

चीन में सोशल मीडिया पर पोस्ट करनेवाले दर्जनभर लोग हिरासत में लिए गए हैं। इन पर आरोप है कि उन्होंने इंटरनेट पर आपदा में मरने और लापता होने वाले लोगों का ऐसा आंकड़ा पोस्ट किया, जो सरकार के आधिकारिक डेटा से काफी ज़्यादा था। पकड़े गए लोगों में से लियूनाम के एक यूजर ने दावा किया था कि मडफ्लड में 3,000 से अधिक लोग मारे गए, जबकि किउ नामक यूजर ने लिखा कि तिब्बत में सैकड़ों लोग मरे हैं, और असल में 3,000 लोग लापता हैं।

हिमालय की सीमा के कीचड़ भरे किनारों पर हजारों लापता अपनों को ढूंढ रहे परिवारों के लिए, सहयोग उतना ही धुंधला है, जितना डिजिटल फायरवॉल के पीछे का सच। चीन की बड़ी माइक्रोब्लॉगिंग वेबसाइट वीबो पर भी कहानी को इसी तरह मैनेज किया गया। चीन की प्रोपेगंडा मशीन एक बार फिर नेपाल सीमा पर अपनी नाकामियां छिपाने में व्यस्त हो गई। दो बहुत ज़्यादा प्रचारित, लंबी सरकारी रिपोर्टें खबरों में छाई रहीं। उनमें से पहला, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने बचाव और राहत के कामों को कोऑर्डिनेट करने के लिए सेंट्रल पोलित ब्यूरो की मीटिंग बुलाई, और दूसरी खबर थी– प्रीमियर ली कियांग का आपदा का मुआयना करने के लिए ग्यिरोंग पहुंचना।

फिर भी, चीन की नाकामियों की खबरें किसी न किसी सूरत में छनकर बाहर आती ही रहीं। चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज (ब्ै) के रिसर्चर्स ने कैलकुलेट किया कि जब मलबे का बहाव तिब्बत के ग्यिरोंग पोर्ट के चेकपॉइंट से टकराया, तो उसकी सरफेस वेलोसिटी 19 मीटर प्रति सेकंड थी। उसके बाद बॉर्डर क्रॉसिंग से 52 किलोमीटर दूर नेपाल की त्रिशूली नदी पर बने पुल तक पहुंचने तक बाढ़ की सरफेस वेलोसिटी लगभग 11.7 मीटर प्रति सेकंड थी। इसका मतलब है कि बहाव को पुल तक पहुंचने में 46 से 75 मिनट लगे। नेपाली अधिकारियों ने बॉर्डर पार करने के बाद बहाव को समय पर चेतावनी देने में नाकाम रहने के लिए चीनी सरकार की आलोचना की है।नेपाल की राजधानी काठमांडू में 27 मई 2026 को हुई मीटिंग में बाढ़, मौसम और ग्लेशियर से जुड़े खतरों पर नजर रखने और उनसे निपटने के लिए सहयोग को मजबूत करने पर चर्चा की थी। उस बैठक में हिमनदों की सूची और खतरे की मैपिंग चीनी पक्ष से मांगी गई। दो नेपाली अधिकारियों ने कहा कि मीटिंग के बाद उन्हें ग्लेशियर के खतरों और पानी के लेवल के बारे में चीन से उतनी जानकारी नहीं मिली, जितनी वे चाहते थे। उन्हें डर था कि कम डेटा शेयरिंग से बड़ी आपदाओं का अंदाजा लगाने और उनके लिए तैयारी करने की उनकी क्षमता पर असर पड़ सकता है।

नदियों में जल बहे, विवाद नहीं

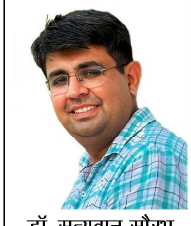

—डॉ. सत्यवान सौरभ—

अंतरराज्यीय नदियाँ केवल बहते पानी की नदियाँ ही नहीं हैं, बल्कि ये जीवन रेखाएँ हैं जो कृषि उत्पादन, पेयजल आपूर्ति, उद्योगों, पारिस्थितिकी तंत्र और लाखों लोगों की आजीविका को सहारा देती हैं। हालाँकि, नदियों का प्रवाह राज्य की सीमाओं को भी पार कर सकता है, इसलिए इनका प्रबंधन राज्यों के बीच टकराव का कारण बन सकता है। हाल ही में बिहार–झारखंड के बीच सोन नदी को लेकर हुआ समझौता, जिसका उद्देश्य लगभग 25 वर्षों से चले आ रहे जल विवाद को बातचीत के माध्यम से हल करना है, सतत जल प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है दृ एक ऐसा जल मुद्दा जिसे केवल सहयोग से ही सुलझाया जा सकता है, न कि टकराव से।

अंतरराज्यीय जल संघर्षों के निरंतर बने रहने का मुख्य कारण जल विकास के लिए परस्पर विरोधी हित हैं। एक राज्य सिंचाई के लिए अधिक जल का उपयोग कर सकता है, जबकि दूसरा पेयजल, उद्योग या शहरी विकास के लिए। ये सभी आवश्यकताएँ जायज हैं, लेकिन जल सीमित है। यदि कई राज्य एक ही नदी पर निर्भर हैं, तो संसाधन दुर्लभ हो जाते हैं और इन आवश्यकताओं को संतुलित करना संघीय प्रशासन के लिए एक चुनौती बन जाता है।

विभिन्न क्षेत्रों और ऋतुओं में जल असंतुलन से जटिलताएं और बढ़ जाती हैं। मानसून के मौसम में अच्छी वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में उस दौरान भारी वर्षा हो सकती है, लेकिन ग्रीष्म ऋतु में वर्षा की कमी हो सकती है। इस प्रकार, एक नदी एक वर्ष भरपूर जल से भरी हो सकती है और दूसरे वर्ष विरल हो सकती है। जलवायु परिवर्तन के कारण यह स्थिति और भी अनिश्चित होती जा रही है। वर्षा के बदलते पैटर्न से नदियों के प्रवाह में परिवर्तन हो रहा है, जबकि लंबे समय तक सूखा पड़ने और चरम मौसम की घटनाएं भी जल उपलब्धता को प्रभावित कर रही हैं और जल उपलब्धता के बारे में अनुमानों को कम विश्वसनीय बना रही हैं। प्रशासनिक पुनर्गठन से ऐतिहासिक समझौतों पर असहमति भी उत्पन्न हो सकती है। बिहार–झारखंड संबंधों के मामले में भी यही स्थिति है। एक ही प्रशासनिक ढांचे के भीतर हुए समझौतों पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है यदि राज्यों का पुनर्गठन हो और उनकी कृषि, जनसंख्या और आर्थिक आवश्यकताएं विकसित हों। दशकों पहले प्रचलित शनिष्पक्षताश की अवधारणा वर्तमान संदर्भ में लागू होना आवश्यक नहीं है।

संघर्ष का एक अन्य बड़ा कारण ऊपरी इलाकों में चल रही परियोजनाओं का विकास और उनका उपयोग है। बांधों, बैराजों और सिंचाई योजनाओं के कारण निचले इलाकों में पानी की मात्रा और निकासी का कार्यक्रम प्रभावित हो सकता है। सूचना साझाकरण और राज्यों के बीच परियोजना समन्वय के अभाव में, तकनीकी कार्य में निपुणता भी अविश्वास का कारण बन सकती है।

पारदर्शी और वास्तविक समय के जलवैज्ञानिक आंकड़ों की अनुपलब्धता विवादों को और बढ़ा देती है। राज्यों के बीच आवंटित जल की मात्रा और उपलब्ध जल की मात्रा को लेकर अलग–अलग लक्ष्य हो सकते हैं। यदि वर्षा की मात्रा, नदी के प्रवाह, जलाशयों के स्तर और जल उपयोग के बारे में कोई साझा, वैज्ञानिक रूप से स्वीकृत जानकारी उपलब्ध नहीं है, तो बातचीत आसानी से परस्पर विरोधी मांगों पर बहस में बदल सकती है।

अगर लोग राजनीतिक रूप से संगठित हो जाते हैं तो स्थिति और बिगड़ सकती है। पानी का मुद्दा भावनात्मक है और इसका किसानों, परिवारों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अगर तकनीकी समस्या क्षेत्रीय मुद्दा या राजनीतिक विवाद बन जाती है, तो समझौता करना मुश्किल हो जाता है। संस्थागत संवाद का यही उद्देश्य है, ताकि यह एक लंबा संघीय संघर्ष न बन जाए।

सोन नदी के लिए बिहार–झारखंड का दर्जा समझौता वार्ता के महत्व का एक उदाहरण है। दोनों राज्यों ने आपसी सहमति से समाधान खोजने के लिए एक–दूसरे से संपर्क साधकर अहिंसक तरीके से विवाद को सुलझाने का प्रयास किया है। रिपोर्ट के अनुसार, बिहार को 575 करोड़ एकड़–फीट (ड।थ) और झारखंड को 2 करोड़ एकड़–फीट (ड।थ) जल आवंटन प्राप्त हुआ है। लेकिन इस समझौते का प्रभाव केवल इन आंकड़ों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके दूरगामी परिणाम भी हैं। इसका वास्तविक महत्व यह संदेश देना है कि राज्य अपने हितों की रक्षा करने के साथ–साथ अन्य राज्यों की आवश्यकताओं को भी समझने में सक्षम हैं। बातचीत से साझा अवसंरचना के बेहतर उपयोग के अवसर भी मिल सकते हैं। खंडित जल प्रबंधन की बजाय समन्वित जल प्रबंधन से इंद्रपुरी बैराज और उससे जुड़े नहर नेटवर्क से अधिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। साझा अवसंरचना को सहयोग का आधार बनना चाहिए, न कि विभाजन का नया कारण।

अब भारत के लिए राज्य–आधारित दृष्टिकोण से हटकर नदी–बेसिन–आधारित दृष्टिकोण अपनाने का समय आ गया है। नदी बेसिन एक एकल पारिस्थितिक–आर्थिक इकाई है। इसलिए जल नियोजन के लिए नदी के ऊपरी और निचले समुदायों, भूजल, पर्यावरणीय प्रवाह, कृषि, पेयजल और औद्योगिक उपयोगों को ध्यान में रखा जाना चाहिए ।सर्वप्रथम, जलविज्ञानीय डेटा साझा करने की खुली और अद्यतन प्रक्रियाओं को स्थापित करना महत्वपूर्ण है। रुचि रखने वाले सभी राज्यों को एक ही विश्वसनीय जानकारी तक पहुंच प्राप्त होनी चाहिए। प्रौद्योगिकी नदियों की निगरानी की सटीकता में सुधार करने और विभिन्न स्रोतों से प्राप्त डेटा पर विवाद को कम करने में सहायक हो सकती है। दूसरे, मध्यस्थता के तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है।

पीडीए के नारे पर अनुप्रिया पटेल का तंज, सत्ता से बाहर होते ही याद आती है पिछड़ों की

संवाददाता–देवरिया। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री और अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने कहा कि चुनाव आते ही अचानक आरक्षण पर चर्चाएं तेज हो जाती हैं। ऐसे में लोगों को भ्रमित या प्रभावित होने के बजाय यह सोचना चाहिए कि चुनाव से पहले ही आरक्षण का मुद्दा क्यों उठाया जाता है। आरक्षण देश के संविधान की देन है। संविधान ने सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े, दलित, वंचित और दबे–कुचले समाज को सरकारी नौकरियों और सरकारी शिक्षण संस्थानों में आरक्षण की व्यवस्था दी है।

मोदी सरकार इससे एक कदम आगे बढ़कर आर्थिक आधार पर भी आरक्षण दे चुकी है। आज आरक्षण का लाभ किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को मिल रहा है। आरक्षण कोई खैरात या भीख नहीं, बल्कि संविधान प्रदत्त अधिकार है। देश संविधान से चलेगा और इसमें कोई बदलाव नहीं कर सकता।

वह शहर के टाउनहाल स्थित आडिटोरियम में जिला स्तरीय कार्यकर्ता समागम को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि जो लोग आरक्षण को लेकर भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, उनसे सवाल किया जाना चाहिए कि क्या समाज में भेदभाव पूरी तरह समाप्त हो गया है? क्या सरकारी नौकरियों का बैकलॉग पूरा हो गया है? क्या शैक्षणिक संस्थानों में पिछड़े, दलित और वंचित समाज के बच्चे उस संख्या में पहुंच गए हैं, जितनी उनकी भागीदारी होनी चाहिए? यदि ऐसा नहीं हुआ है तो इसका मतलब है कि भेदभाव अभी भी जारी है।

अनुप्रिया पटेल ने कहा कि जो पार्टियां आज लोगों के अधिकारों को लेकर चिंतित दिखाई दे रही हैं, उन्हें यह भी बताना चाहिए कि सत्ता में रहने के दौरान उन्होंने पिछड़े, दलित और वंचित समाज के अधिकारों के लिए क्या किया। उन्होंने कहा कि यदि बिहार में नीतीश कुमार जातीय जनगणना करा सकते थे तो उत्तर प्रदेश की तत्कालीन समाजवादी पार्टी सरकार भी ऐसा कर सकती थी, लेकिन उसने नहीं कराया। इसलिए सभी का हित एनडीए में सुरक्षित है। जनता ने भी लगातार एनडीए प्रत्याशियों पर विश्वास जताया है।

'अपना दल में तो अपनापन है' नारे का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में समय–समय पर कई पार्टियां बनीं, लेकिन बिना सत्ता का स्वाद चखे 1995 से आज तक लोगों के दिलों की धड़कन बनी रहने वाली पार्टी अपना दल ही है। सीमित राजनीतिक ताकत के बावजूद पार्टी संघर्षों से कभी पीछे नहीं हटी। अपना दल लगातार हाशिये पर पड़े समाज के अधिकारों की लड़ाई लड़ता रहा है और दलित, पिछड़े व कमजोर वर्गों की आवाज उठाता रहा है, जिन्हें व्यवस्था में हमेशा उपेक्षित रखा गया। सपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि पीडीए की बात करने वालों को इसकी याद तब आती है, जब वे सत्ता से बाहर हो जाते हैं। ऐसी पार्टियों ने उत्तर प्रदेश में कई बार सत्ता संभाली, लेकिन उनके शासनकाल में पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समाज का कितना ख्याल रखा गया, यह जनता को याद करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार के समय यश भारती पुरस्कार दिया जाता था, लेकिन उसमें पीडीए क्यों गायब था? दलित, अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के लोगों को यह सम्मान क्यों नहीं दिया गया? यह उनके दोहरे चरित्र को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सत्ता और सरकार के साथ रहने के बावजूद अपना दल (एस) ने लगातार जातीय जनगणना की मांग उठाई। केंद्र सरकार ने जातीय जनगणना कराने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपीए सरकार ने 2011 में जातीय जनगणना के नाम पर धोखा किया था। आज विपक्ष भले ही जातीय जनगणना के नाम पर समाज को बरगलाने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन जब उसके हाथ में सत्ता थी, तब ऐसी सर्वे प्रक्रिया अपनाई गई कि जातियों के सही आंकड़े सामने ही नहीं आ सके।

दो सगी बहनों की सरयू में डूबने से मौत

संवाददाता–गोंडा। जिले के थाना क्षेत्र के ग्राम भौरीगंज स्थित सरयू नदी के श्रीराम–जानकी घाट पर रविवार सुबह स्नान करते समय पैर फिसलने से दो सगी बहनों की डूबकर मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद दोनों के शव नदी से बाहर निकाले। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ग्राम राजापुर के बद्दू पुरवा निवासी अरुण तिवारी की पुत्री सुप्रिया तिवारी (15) और सुहानी तिवारी (9) रविवार सुबह करीब दस बजे साइकिल से भौरीगंज स्थित श्रीराम–जानकी घाट पर सरयू नदी में मछलियों को चारा डालने और स्नान करने गई थीं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मछलियों को चारा डालने के बाद दोनों बहनें नदी में स्नान करने लगीं। इसी दौरान छोटी बहन सुहानी का पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चली गई।

सुहानी को डूबता देख बड़ी बहन सुप्रिया ने उसे बचाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वह भी गहरे पानी में चली गई। दोनों बहनों को डूबता देखकर घाट के पास मौजूद ग्रामीणों ने नदी में छलांग लगा दी और उन्हें बचाने का प्रयास किया। काफी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने दोनों को नदी से बाहर निकाला, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों किशोरियों को एंबुलेंस से परसपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।थानाध्यक्ष कमल शंकर चतुर्वेदी ने बताया कि परिजनों की सूचना पर पंचायतनामा भरकर दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। घटना की सूचना परिजनों को दे दी गई है।

परसपुर। राजापुर के बद्दू पुरवा निवासी अरुण तिवारी रोजगार के सिलसिले में लुधियाना के फिरोजपुर में रहते हैं। घर पर पत्नी रीना तिवारी अपनी तीन बेटियों के साथ रहती हैं। हादसे के समय बड़ी बहन एकता घर पर थी। सुप्रिया तुलसी स्मारक इंटर कॉलेज में हाईस्कूल की छात्रा थी, जबकि सुहानी जूनियर कक्षा में पढ़ती थी। दोनों बहनों की मौत की सूचना मिलते ही मां रीना और बड़ी बहन एकता का रो–रोकर हाल बेहाल है। हृदयविदारक घटना से गांव में मातम पसरा है। बड़ी संख्या में लोग घर पहुंचकर परिजनों को ढांढस बंधा रहे हैं।

ससुराल आए युवक की गड्ढे में डूबकर मौत

संवाददाता–गोंडा। कर्नलगंज तहसील क्षेत्र में रविवार दोपहर दर्दनाक हादसा हो गया। ब्रह्मचारी चौराहा–पिपरी रावत के पास बाइक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पानी भरे गहरे गड्ढे में गिर गई। हादसे में बाइक सवार 28 वर्षीय युवक की डूबने से मौत हो गई। मृतक की पहचान राघव शुक्ला (28) निवासी ग्राम फरेंदा, थाना फखरपुर, जनपद बहराइच के रूप में हुई है। राघव रविवार दोपहर करीब 3 बजे मोटरसाइकिल से कर्नलगंज थाना क्षेत्र के बसालतपुर मन्नीपुरवा गांव स्थित अपनी ससुराल जा रहे थे। उन्हें अपने ससुर रामदेव दीक्षित के घर जाना था। बताया जा रहा है कि ब्रह्मचारी चौराहा–पिपरी रावत के पास सड़क किनारे बारिश के पानी से भरा गहरा गड्ढा था। इसी दौरान बाइक अचानक अनियंत्रित होकर फिसल गई और राघव बाइक समेत गड्ढे में जा गिरे। हादसे में उनका सिर गहरे पानी में चला गया। वह खुद को संभाल नहीं सके और काफी देर तक पानी में डूबे रहने के कारण उनकी हालत बिगड़ गई। बाइक और युवक को गड्ढे में गिरा देखकर राहगीरों और स्थानीय ग्रामीणों ने उन्हें बाहर निकाला। इसके बाद घटना की जानकारी ससुराल पक्ष और परिजनों को दी गई। परिजन मौके पर पहुंचे और राघव को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) कर्नलगंज ले गए। वहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है। सूचना मिलने पर कर्नलगंज पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल की जांच की।

श्रीराम कथा में बही भक्ति की रसधारा, शबरी की भक्ति से भावविभोर हुए श्रद्धालु

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। श्रीमद्गुरु अग्रपीठाधीश्वर रैवासा धाम के साकेतवासी स्वामी डॉ. राघवाचार्य वेदांतीजी महाराज के द्वितीय साकेतोत्सव के उपलक्ष्य में श्री अवध बिहारी कुंज अयोध्या धाम में चल रहे नौ दिवसीय श्री सियापिया मिलन महोत्सव के छठवें दिन श्रीराम कथा में भक्ति की रसधारा प्रवाहित हुई। कथा व्यास श्री अवध बिहारी कुंज के पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 डॉ. गणेशदासजी महाराज ने भगवान श्रीराम के वनगमन से लेकर विभिन्न प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन किया।कथा व्यास ने कहा कि चित्रकूट में भगवान श्रीराम की चरण पादुकाएं लेकर भरत अयोध्या लौटे, जबकि प्रभु श्रीराम आगे वन की ओर प्रस्थान कर गए। इसी दौरान भगवान ने खर–दूषण जैसे दुर्दांत राक्षसों का वध किया। उन्होंने शूर्पणखा प्रसंग का वर्णन करते हुए बताया कि लक्ष्मणजी द्वारा शूर्पणखा का नाक–कान काटे जाने के बाद वह रावण के पास पहुंची। इसके बाद रावण अपने मामा मारीच के साथ छलपूर्वक माता सीता के हरण की योजना बनाकर उन्हें अपने साथ ले गया। महाराज ने बताया कि माता सीता के वियोग में भगवान श्रीराम उनकी खोज में निकले। मार्ग में उन्होंने पक्षीराज जटायु का उद्धार किया और माता शबरी के आश्रम पहुंचे। शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर प्रभु ने उनके प्रेम को स्वीकार किया। इसके बाद भगवान श्रीराम की हनुमानजी से भेंट हुई और सुग्रीव से उनकी मित्रता हुई। आगे चलकर भगवान ने बाली का वध कर सुग्रीव को उसका राज्य पुनरू दिलाया।भगवान श्रीराम के वनवासी जीवन, माता सीता की खोज, जटायु के उद्धार, शबरी की भक्ति और हनुमानजी से प्रभु के मिलन के प्रसंग सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। कथा के दौरान जय श्रीराम के जयघोष से वातावरण भक्तिमय बना रहा।यह नौ दिवसीय श्री सियापिया मिलन महोत्सव महामंडलेश्वर हरिकृष्ण दास ग्वालिया बाबा की ओर से अपने गुरुदेव साकेतवासी स्वामी डॉ. राघवाचार्य वेदांतीजी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। महोत्सव में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु कथा श्रवण के लिए पहुंच रहे हैं।

रोहिन बैराज का जलस्तर लाल निशान पार

संवाददाता–महराजगंज। जिले में रुक–रुक कर हो रही बारिश के बीच नौतनवा व निचलौल तहसील क्षेत्र में भारी बारिश की संभावना व्यक्त करते हुए विशेष सतर्कता बरतने की चेतावनी जारी की गई है। प्रशासन ने संबंधित तहसीलदारों, नायब तहसीलदारों व राजस्व निरीक्षकों व लेखपालों को अपने–अपने क्षेत्रों में सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। बाढ़ नियंत्रण कक्ष के अनुसार रविवार शाम चार बजे वाल्मीकिनगर स्थित गंडक बैराज से 1.29 लाख क्यूसेक पानी का डिस्चार्ज जारी है, जिससे बैराज का अपस्ट्रीम जलस्तर 110.41 मीटर दर्ज किया गया है। वहीं रतनपुर स्थित रोहिन बैराज पर जलस्तर खतरे के निशान 99.35 मीटर को पार कर 99.48 मीटर पर बना हुआ है। हालांकि रोहिन नदी का जलस्तर त्रिमुहानी घाट पर 79.65 मीटर पर घटकर खतरे के निशान 82.44 मीटर से काफी नीचे आ गया है। महाव नाला में जलस्तर घटकर 5 फीट पर पहुंच गया है। राप्ती व प्यास नदियां भी फिलहाल खतरे के निशान से नीचे बह रही हैं। प्रशासन ने सभी राजस्व कर्मियों को निर्देश दिया है कि वे ग्राम प्रधानों व स्थानीय संपर्क सूत्रों के माध्यम से निचले व संवेदनशील इलाकों की स्थिति पर नजर रखें। किसी भी क्षति या आपात स्थिति की सूचना तत्काल उच्चाधिकारियों को दें। साथ ही, बारिश व आकाशीय बिजली की आशंका को देखते हुए कर्मियों को फील्ड में सुरक्षा बरतने की सलाह दी गई है। नियंत्रण कक्ष के अनुसार जिले और नेपाल सीमा से लगे समस्त तटबंधा फिलहाल पूरी तरह सुरक्षित हैं।

सुभासपा महासचिव बोले– पंचायत चुनाव विधानसभा के बाद होगा, सपा पर साधा निशाना

संवाददाता–गोंडा। गौरा विधानसभा क्षेत्र के बभनजोत विकासखंड परिसर में रविवार शाम 4रू30 बजे सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) की ओर से सामाजिक समरसता सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें सुभासपा के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव डॉ. अरविंद राजभर और गौरा विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक प्रभात वर्मा शामिल हुए। दोनों नेताओं ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए आपसी भाईचारा और क्षेत्र के विकास के लिए एकजुट होकर काम करने की अपील की। उन्होंने कहा कि समाज के सभी वर्गों के अधिकार, सम्मान और विकास के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। पंचायत चुनाव को लेकर डॉ. अरविंद राजभर ने कहा कि मामला न्यायालय में विचाराधीन है। पंचायत राज विभाग चुनाव कराने के लिए तैयार है, लेकिन इलाहाबाद हाईकोर्ट में दाखिल याचिका पर अभी फैसला नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा कि हर 15 दिन में सुनवाई हो रही है, लेकिन तारीख आगे बढ़ रही है। राजभर ने कहा कि 2027 के लोकसभा चुनाव भी नजदीक हैं और नवंबर–दिसंबर में विधानसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने की संभावना है। ऐसे में उन्हें लगता है कि पंचायत चुनाव विधानसभा चुनाव के बाद ही होंगे।

सहारनपुर में मस्जिद गिराए जाने के बाद समाजवादी पार्टी की ओर से डेलिगेशन भेजे जाने को लेकर डॉ. अरविंद राजभर ने सपा पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सपा की ओर से डेलिगेशन भेजना अब एक तरह से नियम बन गया है। राजभर ने कहा कि अगर कहीं कुछ अवैध बना है तो वह जरूर गिरेगा। सपा के डेलिगेशन भेजने से कार्रवाई नहीं रुकेगी। उन्होंने कहा कि योगी आदित्यनाथ सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति स्पष्ट है। कहीं भी अवैध कब्जा है तो उसे खाली कराया जाएगा, चाहे वह मस्जिद ही क्यों न हो। कांग्रेस नेता इमरान मसूद के मस्जिद गिराए जाने के मामले में हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक लड़ाई लड़ने संबंधी बयान पर भी डॉ. अरविंद राजभर ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि सरकार किसी के खिलाफ बदले की भावना से कार्रवाई नहीं कर रही है। उन्होंने कहा कि न्यायालय सभी को न्याय देने का काम करता है और यदि किसी को आपत्ति है तो वह न्यायालय जा सकता है। उसे न्यायालय जाने से कौन रोक रहा है। डॉ. अरविंद राजभर ने कहा कि यदि सरकार या प्रशासन को कहीं अवैध कब्जे या अवैध गतिविधि की जानकारी मिलती है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने कहा कि उनके नेता ओमप्रकाश राजभर का भी स्पष्ट निर्देश है कि चाहे मदरसा हो या मस्जिद, अगर वहां गलत काम हो रहा है तो उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।

दिनदहाड़े लूट का तीसरा आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता–गोंडा। करनैलगंज कोतवाली पुलिस ने रविवार शाम करीब 5 बजे व्यापारी से दिनदहाड़े हुई लूट के मामले में फरार चल रहे तीसरे आरोपी सत्यम सिंह को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसे नारायणपुर माझा की ओर जाने वाली सड़क के पास स्थित एक प्राथमिक विद्यालय से पकड़ा। आरोपी के कब्जे से लूट के 55,150 रुपए नकद बरामद हुए हैं। मेडिकल जांच के बाद उसे गोंडा कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। 27 अगस्त को प्रयागराज के भवानीपुर गांव निवासी व्यापारी राजकुमार शुक्ला करनैलगंज कोतवाली क्षेत्र के सकरौरा में वाहन खरीदने आए थे। उन्होंने अपनी कार करनैलगंज कस्बे में खड़ी की और पैदल सकरौरा ग्रामीण की ओर जा रहे थे। सरजू बालिका इंटर कॉलेज के पास दो बाइक सवार तीन बदमाशों ने उन्हें रोक लिया। आरोपियों ने व्यापारी से 1 लाख रुपए और कागजात वाला बैग छीन लिया और फरार हो गए। घटना के बाद राजकुमार शुक्ला ने 28 अगस्त को करनैलगंज कोतवाली में लूट का मुकदमा दर्ज कराया था। मामले के खुलासे के लिए पुलिस की तीन टीमें लगाई गई थीं। जांच के दौरान पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू की। पुलिस ने इस मामले में 29 अगस्त को आशू मिश्रा और आशुतोष मिश्रा को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। उनके कब्जे से लूट के 23 हजार रुपए बरामद किए गए थे। अब तीसरे आरोपी सत्यम सिंह की गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने उसके पास से 55,150 रुपए बरामद किए हैं। करनैलगंज कोतवाल नरेंद्र प्रताप राय ने बताया कि सत्यम सिंह की गिरफ्तारी के साथ ही लूट के मामले में अब तक तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। मामले की जांच अभी जारी है और लूट में शामिल अन्य पहलुओं की भी पड़ताल की जा रही है।

गोवंश तस्करी के आरोप में चार वांछित गिरफ्तार

संवाददाता–बलरामपुर। महराजगंज तराई थाना पुलिस ने अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के दौरान गैंगस्टर एक्ट के एक मामले में चार वांछित आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, ये आरोपी गोवंश पशुओं को एकांत जगहों पर इकट्ठा करते थे। फिर उन्हें पिकअप में क्रूरता से लादकर बिहार ले जाते थे। वहां वध के मकसद से बेचकर पैसे कमाते थे। रविवार शाम 4 बजे एएसपी विशाल पांडेय ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महराजगंज तराई थाने में अलाउद्दीन समेत छह आरोपियों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट की धारा 3(1) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। इसी मामले में वांछित चल रहे अलाउद्दीन (46), शमशाद (36), मंशाराम (46) और श्रवण कुमार यादव उर्फ नेता को पुलिस टीम ने रविवार को रमईडीह बाजार के पास से पकड़ा। पुलिस का आरोप है कि गैंगलीडर अलाउद्दीन, जो परसा सुकुरुल्ला, थाना उसका बाजार, सिद्धार्थनगर का रहने वाला है, अपने साथियों के साथ मिलकर गोवंश पशुओं की तस्करी करता था। वह आर्थिक फायदे के लिए यह काम करता था। पुलिस के मुताबिक, यह गिरोह पशुओं को एकांत जगह पर इकट्ठा करता था। फिर उन्हें पिकअप में लादकर बिहार ले जाता था और वहां बेचकर पैसे कमाता था। गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने पहले से दर्ज कई मुकदमों का भी जिक्र किया है। अलाउद्दीन और शमशाद समेत अन्य आरोपियों पर गोवध निवारण अधिनियम और पशु क्रूरता अधिनियम के मामले दर्ज हैं। अलाउद्दीन के खिलाफ सिद्धार्थनगर में भी मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस ने बताया कि अन्य आरोपियों के खिलाफ मारपीट, सड़क दुर्घटना और आबकारी अधिनियम समेत कई धाराओं में मामले दर्ज हैं। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार किए गए चारों आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है। एसपी मार्तण्ड प्रकाश सिंह के निर्देश पर प्रभारी निरीक्षक संतोष कुमार तिवारी के नेतृत्व में टीम ने यह गिरफ्तारी की।

सीट से गायब 'बड़े बाबू', अवकाश का हिसाब भी साफ नहीं!

श्रीराम अस्पताल के प्रधान लिपिक वीपी सिंह की कार्यशैली पर उठे सवाल, बिना सूचना अनुपस्थिति के आरोप

–भारतीय बस्ती संवाददाता

अयोध्या। श्रीराम चिकित्सालय की प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। अस्पताल के प्रधान लिपिक वीपी सिंह की कथित अनियमित उपस्थिति को लेकर अस्पताल से जुड़े लोगों में चर्चा है। आरोप है कि वह कई बार कार्यालय की अपनी सीट पर मौजूद नहीं मिलते हैं। इससे जरूरी प्रशासनिक कार्यों के लिए आने वाले लोगों को परेशानी उठानी पड़ती है।मामला तब और गंभीर हो जाता है जब उनकी अनुपस्थिति को लेकर पूछताछ की जाती है। सूत्रों के अनुसार, संबंधित कर्मचारी को अवकाश पर बताया जाता है, लेकिन अवकाश के लिए दिए गए प्रार्थना पत्र और उसकी सक्षम अधिकारी से स्वीकृति को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। सवाल यह है कि यदि अवकाश स्वीकृत है तो उसका अभिलेख कहां है और यदि अवकाश स्वीकृत नहीं है तो अनुपस्थिति किस आधार पर हुई?

अस्पताल के प्रशासनिक कामकाज में प्रधान लिपिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ऐसे पद पर तैनात कर्मचारी की उपस्थिति और अवकाश का रिकॉर्ड नियमानुसार दर्ज होना चाहिए। इसके बावजूद अवकाश संबंधी अभिलेख को लेकर स्पष्टता नहीं होने की बात सामने आ रही है। सूत्रों का दावा है कि छुट्टी का आवेदन संबंधित स्तर पर उपलब्ध होने के बजाय स्वयं कर्मचारी के पास रहने की चर्चा है। हालांकि, इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है।अस्पताल से जुड़े लोगों के मुताबिक, प्रधान लिपिक के बिना पूर्व सूचना या अनुमति के कार्यालय से अनुपस्थित रहने को लेकर पहले भी सवाल उठते रहे हैं। लगातार सामने आ रही ऐसी शिकायतों ने अस्पताल की प्रशासनिक कार्यप्रणाली और निगरानी व्यवस्था पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

सूत्रों के अनुसार, प्रधान लिपिक के आवास से जुड़े बिजली बिल के भुगतान को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। दावा किया जा रहा है कि बिजली के मीटर का बिल नियमित रूप से जमा नहीं किया जा रहा है। हालांकि, इस संबंध में कोई अधिकृत दस्तावेज अथवा विभागीय पुष्टि सामने नहीं आई है। इसलिए इसकी भी निष्पक्ष जांच की आवश्यकता बताई जा रही है।अस्पताल से जुड़े लोगों और स्थानीय नागरिकों का कहना है कि महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद पर बैठे कर्मचारी की उपस्थिति और अवकाश व्यवस्था में पारदर्शिता जरूरी है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन के अधिकारियों से प्रधान लिपिक की संबंधित दिनों की उपस्थिति, अवकाश आवेदन और उसकी स्वीकृति के अभिलेखों की जांच कराने की मांग की है।लोगों का कहना है कि जांच में यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो जिम्मेदारी तय कर नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए। वहीं, यदि आरोप निराधार हैं तो विभाग को स्थिति स्पष्ट कर चर्चाओं पर विराम लगाना चाहिए।इस संबंध में श्रीराम चिकित्सालय प्रधान लिपिक का पक्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया। लेकिन उपलब्धता न होने के कारण उनका जवाब नहीं मिल सका। जवाब आने पर उनका पक्ष प्रकाशित किया जाएगा।

एनएसजी कमांडो रहे मेजर प्रभाकर देव सिंह लौटे गांव, स्टेशन पर हुआ स्वागत

संवाददाता–गोंडा। भारतीय थल सेना में 12 वर्ष तक एनएसजी कमांडो के रूप में सेवा देने के बाद रिटायर हुए मेजर प्रभाकर देव सिंह रविवार को जब लौट तो गोंडा रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत करने के लिए हुजूम उमड़ पड़ा। हाथों में फूल–मालाएं लिए लोगों ने देशभक्ति के गीतों के बीच उनका स्वागत किया। इस दौरान रिटायर्ड सेना के जवान भी मौजूद रहे।

पंड़रीकृपाल ब्लाक के ग्राम विशुनपुर बैरिया निवासी मेजर प्रभाकर देव सिंह ने सेना में सेवा के दौरान भारत–चीन सीमा पर तैनाती के साथ आतंकियों के खिलाफ कई अहम ऑपरेशन में हिस्सा लिया। उनकी सेवा के लिए उन्हें सेना मेडल से भी सम्मानित किया जा चुका है।

वह 'ऑपरेशन सिंदूर' में भी शामिल रहे। उनके सम्मान में कार्यक्रम 'द वारियर सैनिक परिवार गोंडा' की ओर से आयोजित किया गया था। सेवानिवृत्त मेजर के ट्रेन से उतरते ही गोंड सदर विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने उन्हें को गोद में उठा लिया और देश सेवा की सराहना करते हुए बधाई दी। स्टेशन पर स्वागत के बाद सेवानिवृत्त मेजर खुली जीप में सवार हुए।

इसके बाद करीब 10 किलोमीटर लंबा रोड शो निकाला गया। रोड शो के जरिए वह अपने पैतृक गांव धानेपुर पहुंचे। गांव में भी लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया और देश सेवा के लिए उनके योगदान की सराहना की। सेवानिवृत्त मेजर ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट के सीईओ जितेंद्र मिश्र की तैनाती को लेकर विपक्ष की ओर से उठाए जा रहे सवालों पर भी प्रतिक्रिया दी।

उन्होंने कहा कि जितेंद्र मिश्र को जो जिम्मेदारी मिली है, उसे वह पूरी क्षमता से निभाएंगे। सेना के जवानों के साथ आम जनता को भी उनके नेतृत्व और कार्यक्षमता पर भरोसा है। विधायक ने कहा कि आजकल लोग नेताओं से ज्यादा सेना के जवानों के आने पर खुश होते हैं और ऐसा होना भी चाहिए।

शिक्षक वह है जो बच्चों का जीवन निर्माण करे –डॉ रानी अवस्थी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। शिक्षक दिवस के अवसर पर पांच सितंबर को प्रॉमिनेंट पब्लिक स्कूल समिति की ओर से विद्यालय परिसर में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर शिक्षकों का मन मोह लिया। शिक्षकों ने केक काटकर पूर्व राष्ट्रपति एवं महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती मनाई।कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन देशभर में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह स्वयं महान शिक्षक एवं कई भाषाओं के ज्ञाता थे। इस दिन शिक्षकों के प्रति सम्मान और उनके योगदान को स्मरण किया जाता है।

विद्यालय के शिक्षकों को विद्यार्थियों की ओर से सम्मानित किया गया और पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर डॉ. रानी अवस्थी ने कहा कि शिक्षक का दायित्व बच्चों को सर्वोत्तम ज्ञान देने के साथ उनके व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है। अच्छा शिक्षक वह है जो स्वयं निरंतर सीखता रहे और बच्चों को नई–नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित करे। प्रेरक प्रसंगों और कहानियों के माध्यम से बच्चों को अपनी संस्कृति से परिचित कराना तथा उनमें भारतीय होने का गौरव पैदा करना भी शिक्षक की जिम्मेदारी है।

प्रबंधक राघवेंद्र अवस्थी ने कहा कि शिक्षकों को बच्चों में अभी से देशप्रेम और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करनी चाहिए, ताकि वे भविष्य में देश की मजबूती में अपना योगदान दे सकें।सर्वेश अवस्थी ने कहा कि बच्चों को माता–पिता और गुरु का केवल सम्मान ही नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके बताए मार्ग पर भी चलना चाहिए। माता–पिता और गुरु की डांट को अन्यथा नहीं लेना चाहिए, क्योंकि उनका मार्गदर्शन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए होता है।कार्यक्रम का संचालन संगीता ने किया। शिक्षकों के लिए म्यूजिकल चेयर रेस और म्यूजिक शो का भी आयोजन हुआ, जिसमें शिक्षकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर किरण मिश्र, कांति पांडेय, समीक्षा श्रीवास्तव, आंशिक, मनोज सोनकर सहित विद्यालय के शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को संस्था की ओर से जलपान कराया गया और टॉफियां वितरित की गईं।

जिनका कोई नहीं था, उनके लिए उमड़ा पूरा समाज

–11 लावारिसों की स्मृति में रक्तदान और शांतिभोज का आयोजन
–सेवा समर्पण भाव परिवार की पहल ने पेश की मानवता की मिसाल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिनका इस दुनिया में कोई अपना नहीं था, उनके अंतिम संस्कार की जिम्मेदारी निभाने के बाद सेवा समर्पण भाव परिवार ने उनकी स्मृति में सेवा का एक और अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। संस्था की ओर से रविवार को 11 लावारिस मृतकों की आत्मा की शांति के लिए रक्तदान शिविर एवं शांति भोज का आयोजन किया गया। हर्रैया स्थित सहारा कार्यालय पर आयोजित रक्तदान शिविर में समाजसेवियों और युवाओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कुल 21 लोगों ने रक्तदान कर जरूरतमंदों के जीवन बचाने का संकल्प लिया। शिविर का उद्घाटन ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अवधेश कुमार त्रिपाठी और विकास अधिकारी प्रेम शंकर ओझा ने किया। रक्तदान शिविर के प्रथम रक्तदाता उमंग पाण्डेय को उप जिलाधिकारी हर्रैया उमाकांत त्रिपाठी ने अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर उनका हौसला बढ़ाया। रक्तदान शिविर के आयोजन में बस्ती चौरिटेबल ब्लड बैंक का विशेष सहयोग रहा। रक्तदान कार्यक्रम को सफल बनाने में सत्यम मिश्र, शिवम मिश्र, मुकेश कुमार, जीतेंद्र कुमार, उमंग पाण्डेय, राहुल गौतम और राजकुमार ने महत्वपूर्ण सहयोगी भूमिका निभाई। इनके सहयोग से रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक शिविर में सहभागिता कर मानवता और सेवा का संदेश दिया। अतिथियों द्वारा रक्तदाताओं को अंगवस्त्र, प्रमाण पत्र और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अतिथियों ने रक्तदान को महादान बताते हुए कहा कि रक्त किसी फैक्ट्री में तैयार नहीं किया जा सकता। इसे केवल एक इंसान ही दूसरे इंसान को दे सकता है। इसलिए प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को समय–समय पर रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने सेवा समर्पण भाव परिवार की पहल की सराहना करते हुए कहा कि संस्था ने लावारिस शवों का अंतिम संस्कार कराने के साथ ही उनकी स्मृति में रक्तदान जैसे पुनीत कार्य का आयोजन कर समाज को मानवीय संवेदना का संदेश दिया है।

संस्था के संस्थापक दिलीप पाण्डेय ने बताया कि सेवा समर्पण भाव परिवार द्वारा अब तक 11 ऐसे लावारिस मृतकों का विधि–विधान से दाह संस्कार कराया गया, जिनके अंतिम संस्कार के लिए कोई परिजन सामने नहीं आया था। संस्था ने इन्हें अपना मानकर अंतिम संस्कार की जिम्मेदारी निभाई। उन्हीं दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए यह आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि रक्तदान शिविर में लोगों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। युवाओं और समाजसेवियों ने रक्तदान कर मानवता की सेवा का संकल्प लिया। रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाते हुए आयोजकों ने कहा कि किसी जरूरतमंद के लिए दिया गया रक्त उसके जीवन की डोर बन सकता है। इस तरह का प्रयास समाज में आपसी सहयोग और संवेदना को मजबूत करता है। उमंग पाण्डेय, विष्णु, गणेश शाह, राकेश राय, केएल त्रिपाठी, रोशन शुक्ल, देवांश शुक्ल, पुष्पेन्द्र श्रीवास्तव, आयुष गुप्ता, सनी कटेरा, परमानंद द्विवेदी, सुधांशु द्विवेदी, अनुराग सिंह, दुर्गा प्रसाद वर्मा, राम मिलन वर्मा, परमेश्वर सिंह, सूरज गोस्वामी ने रक्तदान किया। इसके बाद असरा आवास के पास स्थित मंदिर परिसर में शांति भोज का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की और 11 दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की। उपस्थित लोगों ने संस्था के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि जिन लोगों का इस दुनिया में कोई अपना नहीं था, उनकी स्मृति में इस तरह का आयोजन वास्तव में मानवता की सच्ची मिसाल है। सेवा समर्पण भाव परिवार के इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि रिश्ते केवल खून के नहीं होते, संवेदना से भी बनते हैं। समाज में उपेक्षित और असहाय लोगों के प्रति संवेदनशीलता ही वास्तविक सेवा है।

इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, सभासद धर्मध्वज सिंह, सत्य प्रकाश, राज श्रीवास्तव, सभासद प्रतिनिधि रमाकांत पाण्डेय, चन्द्र प्रकाश चौधरी, पूर्व सभासद राजेश प्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद शहजाद, जनार्दन पाण्डेय, शत्रुघ्न पाण्डेय, राजेश सिंह विशेन, अनिल पाण्डेय, सत्यदेव शुक्ल, अनिल त्रिपाठी, योगेश कसेरा, पवन वर्मा, विवेक कान्त पाण्डेय, रवीश कुमार मिश्र, चन्द्र प्रकाश तिवारी, संजीव चौधरी, शक्ति शरण उपाध्याय, पारस नाथ मौर्य, आशीष गुप्ता, मोती चन्द, अजय शुक्ल, उत्तम मिश्र, अनूप पाण्डेय, शिव शंकर शुक्ल, अमित उपाध्याय, नितेश ओझा, छोटू सहारा, सुनील, विशाल आदि उपस्थित रहे।

युवकों ने मचाया बवाल 30 मिनट तक हंगामा

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। आलापुर थाना क्षेत्र के रामनगर बाजार स्थित मसेना मिर्जापुर चौक पर रविवार दोपहर करीब 2रू30 बजे तीन बाइक सवार युवकों ने जमकर हंगामा किया। जहांगीरगंज–बसखारी मुख्य मार्ग पर शराब ठेके के पास विवाद के बाद युवकों ने लाठी–डंडों से मारपीट और गाली–गलौज शुरू कर दी। करीब आधे घंटे तक चले बवाल से बाजार में अफरा–तफरी मच गई। डर के कारण कई दुकानदारों ने अपनी दुकानें बंद कर दीं। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, आपसी विवाद के बाद तीनों युवक हाथों में बांस के मोटे टुकड़े लेकर चौक पर पहुंचे। इसके बाद उन्होंने हंगामा शुरू कर दिया। देखते ही देखते मारपीट और गाली–गलौज होने लगी। अचानक हुए विवाद से बाजार में मौजूद दुकानदार और राहगीर घबरा गए और सुरक्षित स्थानों की ओर चले गए। हंगामे के चलते जहांगीरगंज–बसखारी मुख्य मार्ग पर यातायात भी प्रभावित हुआ। सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। करीब आधे घंटे तक राहगीर और वाहन चालक जाम में फंसे रहे। घटना के बाद बाजार में काफी देर तक तनाव का माहौल बना रहा। हंगामे की सूचना मिलते ही आलापुर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस को आता देखकर तीनों युवक बाइक से चहोड़ा रोड की ओर भागने लगे। पुलिस ने उनका पीछा किया और तीनों को पकड़ लिया। पुलिस के अनुसार, तीनों युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। कार्रवाई के बाद बाजार में स्थिति सामान्य हो गई और शांति बहाल कर दी गई।

सपा नेता की बिना इजाजत निकली रैली से हाईवे जाम, एंबुलेंस फंसी, दौड़ी पहुंची कई थानों की पुलिस

संवाददाता–गोरखपुर। कैंपियरगंज विधानसभा क्षेत्र में सपा नेता साधु यादव की रविवार को निकली प्रस्तावित रैली से गोरखपुर–सोनौली हाईवे पर करीब एक घंटे तक जाम लगा रहा। जंगल कौड़िया टोल प्लाजा पर रैली में शामिल वाहनों और समर्थकों की भीड़ से हाईवे की एक लेन पूरी तरह बाधित हो गई। सैकड़ों वाहन जाम में फंस गए। जाम में एक एंबुलेंस भी फंस गई, जिससे राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सूचना पर पहुंची कई थानों की पुलिस ने बल प्रयोग कर भीड़ को हटाया, जिसके बाद यातायात बहाल हो सका।

सपा नेता साधु यादव की रैली रविवार को पीपीगंज के भरवल से शुरू हुई। रैली शुरू होते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने अनुमति नहीं होने की बात कहते हुए इसे रोकने का प्रयास किया। हालांकि कार्यकर्ताओं की भीड़ के सामने पुलिस को पीछे हटना पड़ा। इसके बाद रैली पीपीगंज होते हुए जंगल कौड़िया की ओर बढ़ गई। इसमें करीब आधा दर्जन ट्रैक्टर, सैकड़ों बाइक और दर्जनों कार शामिल थीं। रैली के जंगल कौड़िया पहुंचने पर वाहनों की संख्या बढ़ती गई और हाईवे की एक लेन पर वाहनों की कतार लग गई। देखते ही देखते टोल प्लाजा के आसपास यातायात पूरी तरह बाधित हो गया। करीब एक घंटे तक सैकड़ों वाहन जाम में फंसे रहे।

सूचना मिलने पर पीपीगंज, कैंपियरगंज, चिलुआताल समेत अन्य थानों की पुलिस मौके पर पहुंची और जाम खुलवाने का प्रयास शुरू किया। पुलिस के मुताबिक रैली के लिए प्रशासन से अनुमति नहीं ली गई थी। यातायात बहाल कराने के दौरान पुलिस ने भीड़ को हटाने के लिए बल प्रयोग किया। इसके बाद वाहनों को आगे बढ़ाया जा सका।

पुलिस कार्रवाई से नाराज पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष चिंता यादव, सपा नेता सुरेंद्र यादव और साधु यादव ने विरोध जताया। वे पैदल रैली निकालने की मांग पर अड़े रहे। इसको लेकर पुलिस और समर्थकों के बीच काफी देर तक विवाद की स्थिति बनी रही। मौके पर अफरातफरी का माहौल रहा। कैंपियरगंज के एसडीएम आलोक रंजन सिंह ने बताया कि रैली के लिए प्रशासन से अनुमति नहीं ली गई थी।

बिना इजाजत निकाली गई रैली की वजह से लगे जाम में फंस गए लोग देर तक परेशान होते रहे। उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि करें तो क्या करें। कई लोगों ने पीछे घूम जाने की कोशिश की लेकिन पीछे भी एक के पीछे एक इतनी गाड़ियां लग गई थीं कि कोई कहीं निकल पा रहा था। अंत में पुलिस ने जब जाम खुलवाने का प्रयास किया तब ही लोग इससे बाहर निकल पाए। इस दौरान कई लोग व्यवस्था को कोसते नजर आए।

बारिश से विशाल आम का पेड़ गिरा

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। रविवार को मिश्रौलिया थाना क्षेत्र के उड़वलिया गांव में भारी बारिश हुई। इसी दौरान हनुमान मंदिर के सामने, मुनीराम चाचा के घर के पास जिगनिहवा – चेतिया – मधवापुर मार्ग पर एक बड़ा आम का पेड़ अचानक गिर गया। अच्छी बात यह रही कि उस समय सड़क पर कोई यात्री या वाहन नहीं था, जिससे बड़ा हादसा टल गया। सड़क से गुजर रहे लोग बाल–बाल बच गए। पेड़ गिरने से यह मार्ग कई घंटों तक जाम रहा और यात्रियों को परेशानी हुई। खबर लिखे जाने तक भी पेड़ का आधा हिस्सा सड़क पर पड़ा हुआ था, जिससे आने–जाने वालों को काफी दिक्कत हो रही थी। उसी चौराहे पर सिलाई का काम करने वाले और गांव के निवासी समाजसेवी हीरालाल निषाद टेलर ने जनता से अपील की है। उन्होंने कहा कि उड़वलिया मार्ग से गुजरने वाले सभी लोग कृपया आराम से और देखकर चलें। साथ ही, उन्होंने बिजली विभाग और वन विभाग से जल्द से जल्द पेड़ को सड़क से हटाने की मांग की है, ताकि आवागमन पहले जैसा हो सके। इस मामले पर चेतिया जंगल बीट प्रभारी वन दरोगा संन्दीप का बयान सामने आया है। उन्होंने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही उच्च अधिकारियों को सूचित कर दिया गया है। पेड़ हटाने के लिए विभाग की टीम मौके पर पहुंच रही है। संदीप ने आगे बताया कि जल्द ही सड़क को साफ कर आवागमन शुरू कर दिया जाएगा।

बोलेरो की चपेट में आने से मासूम बच्ची की मौत

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर थाना क्षेत्र के सीडीओ आवास के सामने रविवार को बोलेरो की चपेट में आने से तीन साल की मासूम बच्ची की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। महराजगंज जिले के बृजमनगंज थाना क्षेत्र के बेलसड़ गांव निवासी कमलेश अपनी पत्नी व बच्ची अंकिता(3) के साथ सिद्धार्थनगर मुख्यालय पर मोबाइल बनवाने आया था। वह मोबाइल बनवाने के बाद सीडीओ आवास के पास परिवार सहित खड़ा था। इसी दौरान एक बोलेरो का चालक वाहन को तेजी के साथ बैक करने लगा और मासूम अंकिता उसकी चपेट में आ गई। आसपास के लोगों के सहयोग से घायल मासूम को शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान मासूम की मौत हो गई। मासूम की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। एसओ नवीन कुमार सिंह ने कहा कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है।

भूमि विवाद को लेकर ताबड़तोड़ फायरिंग, युवक की मौत, तीन महिलाएं हिरासत मे

रामशंकर, मृतक

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सदर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर मोहल्ले में रविवार सुबह भूमि विवाद को लेकर दो पक्षों में हुई कहासुनी के बाद 47 वर्षीय रामशंकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। गोली उनके सीने में लगी और मौके पर ही उनकी मृत्यु हो गई। घटना के बाद मोहल्ले में सनसनी फैल गई। पुलिस ने जगदीशपुर निवासी अतुल दुबे के परिवार की तीन महिलाओं को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए हैं। जगदीशपुर निवासी रामशंकर और उनके पड़ोसी अतुल दुबे के बीच घर के बगल स्थित करीब 200 वर्गफीट जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। मामला न्यायालय में भी लंबित है। विवादित जमीन के एक तरफ नगरपालिका की ओर से सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। बताया जा रहा है कि सड़क से जमीन तक आने–जाने के लिए अतुल दुबे के परिवार की ओर से मजदूरों से जमीन पर स्लोप बनवाया जा रहा था। इसी को लेकर रविवार सुबह दोनों परिवारों के बीच कहासुनी शुरू हो गई। रामशंकर के स्वजन का आरोप है कि कहासुनी के दौरान अतुल दुबे रामशंकर को खींचते हुए अपने घर के भीतर ले गया और वहां अपनी लाइसेंसी डबल बैरल बंदूक से गोली मार दी। गोली लगने से रामशंकर की मौके पर ही मृत्यु हो गई। घटना के बाद परिवार में चीख–पुकार मच गई। वहीं, अतुल दुबे के स्वजन का कहना है कि रामशंकर पक्ष के लोग उनके घर पर चढ़कर मारपीट करने गए थे। उनका आरोप है कि इससे पहले भी रामशंकर का परिवार कई बार मारपीट के लिए उनके घर पर चढ़ चुका था। इसी दौरान अतुल के परिवार में किसी व्यक्ति ने लाइसेंसी बंदूक से रामशंकर पर गोली चला दी, जिससे उनकी मृत्यु हो गई।

घटना को लेकर दोनों पक्षों के अलग–अलग दावे सामने आने के बीच पुलिस अब घटनास्थल और आसपास लगे कैमरों की फुटेज भी खंगाल रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार अतुल दुबे के घर में सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है। ऐसे में घटना के समय की फुटेज से विवाद की शुरुआत और गोली चलने की परिस्थितियों की जानकारी मिल सकती है। घटना की सूचना पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन शुरू की। फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से एक–एक साक्ष्य एकत्र किया। पुलिस ने अतुल दुबे के परिवार की तीन महिलाओं को हिरासत में लिया है। मृतक के स्वजन की ओर से घटना में एक भाजपा नेता का नाम भी लिया जा रहा है, हालांकि पुलिस ने अभी इस संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी है। अपर पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ने बताया कि रामशंकर की गोली मारकर हत्या की गई है। मामले के अन्य बिंदुओं पर जांच की जा रही है। घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए गए हैं और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है। तहरीर मिलने के बाद मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सरिया उठाते ही हाईटेंशन तार से चिपका राजमिस्त्री, मौत

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत इटवा के बिशुनपुर में रविवार को निर्माणाधीन मकान पर काम कर रहे राजमिस्त्री की हाईटेंशन विद्युत तार की चपेट में आने से मौत हो गई। हादसा उस समय हुआ, जब राजमिस्त्री मकान निर्माण के दौरान सरिया उठा रहा था। सरिया ऊपर से गुजर रहे 11 हजार वोल्ट के हाईटेंशन विद्युत तार के संपर्क में आ गया। करंट लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इटवा थाना क्षेत्र के भोपलापुर गांव निवासी अशोक कुमार गुप्त (35) पुत्र विनोद कुमार राजमिस्त्री का कार्य करता था।

रविवार दोपहर वह नगर पंचायत इटवा के बिशुनपुर में एक निर्माणाधीन मकान पर काम कर रहा था। बताया जा रहा है कि काम के दौरान उसने जैसे ही सरिया उठाया, वह ऊपर से गुजर रहे 11 हजार हाईटेंशन विद्युत तार के संपर्क में आ गया। तेज करंट की चपेट में आने से अशोक कुमार गंभीर रूप से झुलस गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक की तीन नाबालिग बेटियां हैं। पिता की मौत से बेटियों का रो–रोकर हाल बेहाल है। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थानाध्यक्ष इटवा अनिल कुमार दुबे ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। रिपोर्ट आने के बाद आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

श्मशान घाट पर गुंबद ढहने से मौत, वकील की पत्नी ने दर्ज कराया मुकदमा, मुख्यमंत्री योगी ने मुआवजे का किया ऐलान

संवाददाता–गोरखपुर। राप्ती नदी के किनारे राजघाट (श्मशान घाट) पर स्थित गुरु गोरक्षनाथ घाट पर रविवार को गुंबदनुमा छत का स्लैब गिरने से मलबे की चपेट में आकर दो अधिवक्ता घायल हो गए। इनमें से एक की अस्पताल में मौत हो गई जबकि दूसरे की हालत गंभीर है। दोनों अधिवक्ता अंतिम संस्कार में शामिल होने घाट पर गए थे। हादसे की वजह आकाशीय बिजली बताई जा रही है। इस मामले में एंबुलेंस पहुंचने और इलाज में देरी का आरोप लगाते हुए अधिवक्ता की पत्नी की तरफ से दी गई तहरीर पर स्वास्थ्यकर्मियों पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। सीएमओ को भी इसमें आरोपी बनाया गया है। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे का संज्ञान लेते हुए पीड़ित परिवार के लिए चार लाख रुपये मदद की घोषणा की है। जरूरत पर मुख्यमंत्री राहत कोष से भी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। वहीं डीएम ने प्रकरण की जांच के आदेश दिए हैं।

आलोक अस्थाना, मृतक

जिला अस्पताल से मेडिकल कॉलेज ले जाते समय राप्तीनगर निवासी अधिवक्ता आलोक अस्थाना की मौत हो गई। वहीं शक्तिनगर कॉलोनी निवासी अधिवक्ता संजय सिंह को गंभीर चोट आने पर मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। दोनों अधिवक्ता अपने साथी अधिवक्ता विनोद तिवारी की मां के अंतिम संस्कार में शामिल होने घाट पहुंचे थे। आलोक की मौत की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में अधिवक्ता जिला अस्पताल पहुंच गए। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने राहत–बचाव कार्य में सहयोग करने के साथ ही घटनास्थल और जिला अस्पताल में सुरक्षा व्यवस्था संभाली। अधिवक्ताओं की भीड़ जुटने के बाद अस्पताल में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया। अधिकारियों ने परिजनों और अधिवक्ताओं से बातचीत कर स्थिति को नियंत्रित किया। जिलाधिकारी दीपक मीणा ने घटना का संज्ञान लेते हुए अधिकारियों से पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली। प्रारंभिक जांच में आकाशीय बिजली गिरने के बाद गुंबदनुमा बैठने वाले स्थान का स्लैब गिरने की बात सामने आई है। डीएम ने संबंधित अधिकारियों को घटनास्थल का निरीक्षण कर संरचना की तकनीकी जांच कराने के निर्देश दिए हैं। घाट परिसर में बनी अन्य ऐसी संरचनाओं की मजबूती की भी जांच कराई जाएगी।

हादसे के बाद परिजनों की ओर से एंबुलेंस पहुंचने में देरी की शिकायत की गई। डीएम ने इस मामले को भी जांच के दायरे में शामिल करते हुए एंबुलेंस के रिस्पॉन्स टाइम की जांच के निर्देश दिए हैं। सूचना मिलने से लेकर एंबुलेंस के मौके पर पहुंचने तक का पूरा विवरण जुटाया जा रहा है। जांच में लापरवाही मिलने पर संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। गुरु गोरक्षनाथ घाट के सुंदरीकरण का प्रस्ताव वर्ष 2019 में तैयार हुआ था। करीब 27 करोड़ 85 लाख 71 हजार रुपये की लागत से घाट का सुंदरीकरण कराया गया था। अंतिम संस्कार में आने वाले लोगों की सुविधा के लिए परिसर में कई चबूतरे और उनके ऊपर गुंबदनुमा छत बनाई गई थी। हादसे के बाद अब इन संरचनाओं की सुरक्षा और मजबूती पर भी सवाल उठे हैं। प्रशासन की तकनीकी जांच के बाद ही गुंबद गिरने की वास्तविक वजह स्पष्ट हो सकेगी।

हादसे के दौरान गोरखपुर के राप्तीनगर के रहने वाले आलोक भी वहीं गुंबद के नीचे बैठा था। वह अपनी मामी के अंतिम संस्कार में शामिल होने घाट पहुंचे थे। हादसे से ठीक पहले एक कुत्ता आकर उनके पास बैठ गया। उसे भगाने के लिए वह उठे और दौड़े, जिससे उनकी जगह बदल गई। इसी दौरान गुंबद ढहा। आलोक वहां होते थे तो वह भी इसकी चपेट में आ जाते लेकिन वह बाल बाल बच गए। आलोक ने कहा कि कुत्ते को भगाने न दौड़ा होता और इस वजह से मैं अपनी जगह से नहीं उठ हीं ता तो मैं भी मलबे में दब जाता। यह घटना जीवन भर नहीं भूलूंगा। साथी के घायल होने की सूचना पर जिला अस्पताल पहुंचे अधिवक्ताओं ने वहां की दुर्व्यवस्था को लेकर नारेबाजी की। घटना की सूचना पर डीएम दीपक मीणा, एसपी सिटी निमिष पाटिल, सिटी मजिस्ट्रेट और सीओ कोतवाली मौके पर पहुंचे हैं। अधिवक्ताओं ने जिला अस्पताल प्रबंधन द्वारा एम्बुलेंस समय से उपलब्ध न कराने का भी आरोप लगाया। उन्होंने जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह ने अपने एक्स हेंडल पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। लिखा,' गोरखपुर में राप्ती नदी के राजघाट श्मशान घाट पर गुंबद गिरने से एक अधिवक्ता की मृत्यु और एक के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना बेहद दुखद है। करोड़ों की लागत से बने घाट पर गुंबद का गिरना, भ्रष्टाचार मुक्त होने का दावा करने वाली सरकार के मुखिया के गृह जनपद में भ्रष्टाचार का जीता–जागता उदाहरण है। इसका कारण सिर्फ हादसा नहीं, भ्रष्ट निर्माण है। इस घटना और निर्माण कार्य की उच्चस्तरीय जांच हो, दोषियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज हो, मृतक परिवार को उचित मुआवजा और घायल को समुचित इलाज की व्यवस्था सरकार करे।'

पीएचसी में लगा मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेला, मरीजों की जांच कर मुफ्त दवाएं बांटी गईं

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। जिले के खेसरहा क्षेत्र में स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मरवटिया बाजार में रविवार को मुख्यमंत्री जन आरोग्य स्वास्थ्य मेला लगाया गया। इस मेले में आसपास के गांवों से आए मरीजों की जांच की गई। जांच के बाद स्वास्थ्यकर्मियों ने मरीजों को जरूरी सलाह दी और मुफ्त दवाएं भी बांटीं। मेले में पहुंचे कई लोगों ने अपनी स्वास्थ्य समस्याओं की जांच कराई। स्वास्थ्यकर्मियों ने मरीजों की बातें सुनीं, उनकी शुरुआती जांच की और जरूरत के हिसाब से दवाएं दीं। इस स्वास्थ्य मेले का मकसद ग्रामीण इलाकों के लोगों को उनके घर के पास ही स्वास्थ्य सुविधाएं देना था। इससे मरीजों को सामान्य बीमारियों के इलाज के लिए दूर के अस्पतालों में नहीं जाना पड़ा। मेले में स्वास्थ्यकर्मियों ने लोगों को नियमित रूप से अपनी जांच कराने और बीमारी के लक्षण दिखने पर समय पर इलाज कराने की सलाह दी। उन्होंने लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और डॉक्टरों की सलाह के अनुसार ही दवा लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में लगे इस मेले में फार्मासिस्ट पी. यादव, लैब टेक्नीशियन जितेंद्र कुमार, स्वीपर रफीक मोहम्मद और वार्ड ब्वाय राधेश्याम मौजूद थे। इन सभी स्वास्थ्यकर्मियों ने मेले में आए मरीजों को स्वास्थ्य सेवाएं देने में मदद की और दवा बांटने की व्यवस्था भी संभाली। ग्रामीण इलाकों में ऐसे स्वास्थ्य मेलों का मुख्य मकसद लोगों को शुरुआती स्तर पर स्वास्थ्य जांच, सलाह और दवाओं की सुविधा देना है। रविवार को छुट्टी का दिन होने के कारण क्षेत्र के लोगों ने इस मेले का फायदा उठाया। स्वास्थ्य विभाग समय–समय पर ऐसे आयोजन करके ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाओं से जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

दैनिक भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com